SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 23 • ISSUE 05 • JULY 2024

हिन्दी मासिक

जुलाई 2024

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

हज के बाद : हसरत और तमन्ना

ये हसरत रह गई पहले से हज करना न सीखा था
कफ़न बरदोश जा पहुँचा मगर मरना न सीखा था
न रहबर था न रहरो था, न मन्ज़िल आशना था मैं
महब्बत का समन्दर, दिल की कशती, नाखुदा था मैं
अगर फ़ज़ले इलाही दस्तगीर अपना न हो जाता
तो इक अदना थपेड़ा मौजे इस्याँ का डुबो जाता

हज़रत सूफ़ी अब्दुर्रहमान (एम.ए.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

जुलाई 2024 वर्ष 23 अंक 05

जुल्म को नापने का पैमाना!

जब जुल्म के लिए मापदण्ड यह बन गया कि ज़ालिम कौन है? ज़ालिम की राष्ट्रीयता, ज़ालिम का समुदाय क्या है? ज़ालिम की भाषा क्या है?उसका मज़हब क्या है? तो इन्सानियत के लिए एक बड़ा खतरा पैदा हो जाता है।

जब जुल्म को नापने और ज़ालिम होने के फ़ैसले का यह पैमाना बन जाता है तो उस समय समाज को कोई ताक़त और बड़ी से बड़ी रचनात्मक योजनाएं भी नहीं बचा सकतीं।

(मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इस्लामी साल का पहला महीना	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	13
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नज़र में	मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	15
ख़ुदा का करम ही करम देख आये	मौलाना सय्यद मु0 सानी हसनी रह0	18
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	19
ईद कुरबाँ के बाद	मौलाना सय्यद मुहम्मदुल हसनी रह0	22
ख़लीफ़ा के चयन में हज़रत उमर	ई0 जावेद इक़बाल	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	27
इस्लाम में शिक्षा का महत्व	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	29
हिमालय से परे	इदारा	31
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0	33
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	इदारा	34
कुर्बानी का महत्व	मोहम्मद इक़बाल नदवी	36
सामप्रदायिकता की हार	ई0 जावेद इक़बाल	38
स्वास्थ्य	इदारा	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-यूसुफ़ः-

अनुवादः–

फिर जब शुभ समाचार देने वाला पहुँचा उसने कुर्ते को उनके चेहरे पर डाला तो उनकी आँख की रोशनी वापस आ गई, वे कहने लगे कि क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि अल्लाह की ओर से मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते(96) वे बोले ऐ हमारे अब्बा जान! हमारे लिए माफ़ी की दुआ कीजिए बेशक हम ही दोषी थे(97) उन्होंने कहा कि मैं आगे तुम्हारे लिए अपने पालनहार से माफ़ी की दुआ करूँगा बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[1](98) फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने माता–पिता को अपने पास ठहराया और कहा कि तुम सब अल्लाह की चाहत से इत्मिनान के साथ मिस्र में प्रवेश करो(99) और अपने माँ–बाप को ऊपर उन्होंने (राज) सिंहासन पर बिठाया और वह सब उनके सामने सज्दे में गिर गये और उन्होंने कहा कि मेरे अब्बा जान! यह मेरे पहले सपने का साकार रूप है मेरे पालनहार ने उसको सच कर दिखाया और उसने मुझपर उस समय बड़ा एहसान किया जब उसने मुझे जेल से निकाला और मेरे और मेरे भाइयों के बीच शैतान के झगड़ा डाल देने के बाद भी उसने तुम्हें देहात से यहाँ पहुँचा दिया बेशक मेरा पालनहार जो चाहता है उपाय से कर लेता है, बेशक वह खूब जानता हिकमत रखता है[2](100) ऐ मेरे पालनहार! बेशक तूने मुझे राज प्रदान किया और बातों की वास्तविकता मुझे सिखाई, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! दुनिया और आख़िरत में तू ही मेरा पालनहार है, मुझे मुसलमान उठाना और भले लोगों में शामिल करना(101) यह ढकी छिपी वे बातें हैं जो हम आपको बता रहे हैं और आप उनके पास नहीं थे जब उन्होंने साजिश करके अपना फ़ैसला पक्का कर लिया था(102) और आप चाहे जितना भी चाहें अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं है[3](103) और आप उस पर उनसे कोई बदला तो मांगते नहीं वह तो दुनिया जहान के लिए नसीहत (उपदेश) है(104) और आसमानों और ज़मीन में कितनी निशानियाँ हैं कि जिनसे वे आँख बंद करके गुज़र जाते हैं(105) और उनमें अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान लाते भी हैं तो साथ साथ शिर्क भी करते जाते हैं(106) क्या वे इससे निर्भीक हो गये कि अल्लाह के अज़ाब में से कोई आफ़त उनको घेर ले या अचानक उन पर क़यामत ही आ जाए और वे एहसास भी न रखते हों(107) कह दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं और मेरी राह चलने वाले समझ बूझ कर अल्लाह की ओर बुलाते हैं और अल्लाह पवित्र है और मैं साझी ठहराने वालों में नहीं हूँ(108) और हमने आपसे पहले जिनको भी भेजा वे बस्तियों के रहने वाले कुछ इंसान ही थे हम उनकी ओर वह्य भेजते थे तो क्या वे ज़मीन में चलते फिरते नहीं कि देख लेते कि उनसे पहले वालों का क्या अंजाम

हुआ और आख़िरत का घर परहेज़गारों के लिए बेहतर है, क्या अब भी तुम नहीं समझते(109) यहाँ तक कि जब रसूल निराश होने लगे[3] और (साझीदार ठहराने वालों) ने समझ लिया कि उनसे झूठ कहा गया बस (उसी समय) हमारी मदद आ पहुँची तो जिसको हम चाहते हैं बचा लिया करते हैं और हमारा अज़ाब अपराधी लोगों से टाला नहीं जा सकता(110) इन घटनाओं की व्याख्या में बुद्धिमानों के लिए अवश्य शिक्षा है, यह कोई ऐसी बात नहीं है जो गढ़ ली गई हो हाँ पिछली किताबों की पुष्टि है और हर चीज़ की स्पष्टीकरण है और ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन व रहमत (दया) है[5](111)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. शायद प्रार्थना के स्वीकार होने के समय की प्रतीक्षा थी और उनकी गलतियों पर चेतावनी का एक रूप भी था।

2. जब क़ाफ़िला मिस्र के करीब आया तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बाहर निकल कर स्वागत किया, माँ–बाप को अपने पास ठहराया फिर सबको लेकर मिस्र में प्रवेश किया, माँ–बाप को उन्होंने विशेष राज सिंहासन पर बैठाया, फिर सब भाई और माँ–बाप आभार की भावना से वशिभूत हो कर सजदे में गिर गये, यह उस सपने का साकार रूप हुआ, सूरज चाँद का अर्थ माँ–बाप थे और ग्यारह सितारों से ग्यारह भाई, यह आदर वाला सजदा (सजद–ए–ताज़ीमी) था जो पिछली उम्मतों में वैध था लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीयत में इसको अवैध करार दिया गया, हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की बहुत बड़ी शिष्टाचार व सज्जनता की बात है कि इस अवसर पर भी उन्होंने कोई शिकायत नहीं की बल्कि हर अवसर पर बेहतर पक्ष का उल्लेख किया और भाईयों ने जो कुछ किया था उसको शैतानी काम कह कर बात समाप्त कर दी।

3. साझी ठहराने वाले (मुश्रिकों) ने जो प्रश्न किया था कि बनी इस्राईल मिस्र में कैसे आबाद हुए, यह उसका पूरा विस्तृत उत्तर हो गया, और यह सब वे ढकी–छिपी बातें थीं जिनसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अवगत नहीं थे, अल्लाह ने वह्य के द्वारा आपको सब कुछ बताया, इसका तक़ाज़ा यह था कि वे मुश्रिक ईमान ले आते लेकिन कह दिया गया कि उनका प्रश्न केवल हठधर्मी था वे ईमान लाने वाले नहीं हैं और उनमें जो अल्लाह को मानते भी हैं वे भी साझी ठहराते हैं, कोई उज़ैर को खुदा का बेटा कहता है कोई ईसा को तो कोई फरिश्तों को खुदा की बेटियाँ क़रार देता है, और उनको तौफ़ीक़ भी नहीं मिलती की पिछली क़ौमों से शिक्षा लें, उनकी बस्तियों के पास से गुज़रते हैं लेकिन ध्यान नहीं देते।

4. अल्लाह के वादे से निराशा तो नबियों से सम्भव ही नहीं, हाँ! उसके पूरा होने का जो समय उन्होंने अपने विवेक से तय किया होगा उससे निराशा सम्भव है या मुश्रिकों के ईमान लाने से निराशा हुई होगी।

5. पिछली आसमानी किताबों में जो घटनाएं बयान की गई हैं उसकी पुष्टि यह किताब है लेकिन उनमें जो हेर फेर कर दी गई है उनका स्पष्टीकरण भी है और ईमान वालों के लिए जो विचार विमर्श करते हैं मार्गदर्शन व दया है। ◆◆

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

एक दिन की मेहमानी फर्ज़ और अनिवार्य हैः-

हज़रत मिक़दाम बिन मअ़दी करिब रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः मेहमान की रात भर की मेहमानी हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है, जो उसके दरवाज़े पर पहुँच जाये वह उस पर कर्ज़ की तरह है, (यानी जिस तरह कर्ज़ चुकाना ज़रूरी है उसी तरह उसकी मेहमानी भी ज़रूरी है, अब वह उस पर है) चाहे उसको पूरा करे चाहे उसको छोड़ दे। (अबू दाऊद)

हज़रत मिक़दाम बिन मअ़दी करिब रज़ि0 से रिवायत है कि जो आदमी किसी भी क़ौम का मेहमान हो और सुबह हो गई लेकिन वह मेहमान महरूम रहा (किसी ने उसकी मेहमानी न कराई) तो उसकी मदद हर मुसलमान पर ज़रूरी है, यहां तक कि वह रात भर की मेहमानी उसकी खेती और माल में से उसूल कर सकता है।

(अबू दाऊद)

दूसरों पर दया करने वालों पर अल्लाह की दया और कृपाः—

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया' जो लोगों पर रहम नहीं खाएगा, अल्लाह उस पर रहम नहीं खाएगा।

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल—आस रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुनाः अल्लाह की सृष्टि पर दया करने वालों पर अल्लाह की खास दया होगी, तुम ज़मीन वाली मख़लूक़ पर दया करो, आसमान वाला तुम पर दया करेगा। (अबू दाऊद)

अभागा आदमी दया से वंचितः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते सुनाः रहमत और दया नहीं निकाली जाती मगर बदनसीब आदमी के दिल से।

(अबू दाऊद)

दया का बदला दया हैः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जो आदमी दया नहीं करता उस पर दया नहीं की जाती।

(बुखारी व मुस्लिम)

दासों पर दयाः—

हज़रत अबू मस्ऊद अंसारी रज़ि0 से रिवायत है कि मैं एक गुलाम को कोड़े से मार रहा था, पीछे से मैंने एक आवाज़ सुनी ''अबू मस्ऊद! जान लो। गुस्से की वजह से मैं आवाज़ को पहचान न सका (कि यह किसकी आवाज़ है), जब वह मुझ से करीब हुए तो देखा कि वह अल्लाह के रसूल सल्ल0 हैं। आप सल्ल0 फरमा रहे थे कि ऐ अबू मस्ऊद! तुम को मालूम होना चाहिए कि तुम जितना इस गुलाम पर वश रखते हो, उससे ज़्यादा अल्लाह तुम पर वश रखता है, मैंने कहा, इसके बाद किसी गुलाम को नहीं मारूँगा।

(मुस्लिम व अबू दाऊद)

मार के बदले गुलाम की आज़ादीः—

हज़रत ज़ाज़ान किन्दी रज़ि0 बयान करते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 के पास आया तो वह

अपने गुलाम को आज़ाद कर चुके थे। उन्होंने ज़मीन से लकड़ी या कोई दूसरी चीज़ उठाई, और कहाः मुझे इतना भी बदला नहीं मिला। मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना है कि जिस आदमी ने अपने किसी गुलाम को चाँटा मारा या उसकी पिटाई की तो उसका बदला यही है कि वह उसको आज़ाद कर दे।

(मुस्लिम व अबू दाऊद)

खर्चा रोकना गुनाह हैः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि0 से रिवायत है कि उनके पास उनका कारिन्दा आया, आप सल्ल0 ने उससे पूछाः क्या तुमने गुलाम को उसका खर्च दे दिया है? उसने कहा नहीं। आपने फरमायाः जाओ और उनको उनका खर्चा दे दो, फिर फरमाया कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 का फरमान है कि आदमी के गुनाह के लिए इतना ही काफी है कि जिसका वह ज़िम्मेदार है उसका खर्चा रोके रखे।

(मुस्लिम)

ज़्यादा से ज़्यादा मॉफ करने की ताक़ीदः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल। खादिम को कितनी बार माफ करें? आप सल्ल0 ने फरमाया हर दिन सत्तर बार।

(अबू दाऊद व तिर्मिज़ी)

अत्याचार करने वालों पर अल्लाह का अज़ाब (दण्ड)ः—

हज़रत हिशाम बिन हकीम बिन हिज़ाम रज़ि0 से रिवायत है कि वह शाम (सीरिया) में कुछ किसानों के पास से गुज़रे, जो धूप में खड़े कर दिये गये थे, और सिर पर तेल डाल दिया गया था। पूछाः क्या है? तो जवाब मिला कि उनको खराज (टैक्स) नहीं देने की वजह से सज़ा दी जा रही है, तो उस समय उन्होंने कहाः मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना है कि अल्लाह तआला उन लोगों को अज़ाब देगा जो दुनिया में अज़ाब देते हैं, फिर वे हाकिम के पास गये और उससे बयान किया, हाकिम ने हुक्म दिया और वे लोग छोड़ दिए गये।

(मुस्लिम व अबू दाऊद, व नसई)

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

सम्पादकीय

इस्लामी साल का पहला महीना ''मुहर्रमुल हराम''

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

साल के बारह महीने अल्लाह की ओर से निश्चित हैं जिस दिन अल्लाह ने यह दुनिया बनाई आकाश और धरती बनाई उसी समय से बारह महीने नियुक्त हुए उन बारह महीनों में चार महीने बहुत ही आदर्णीय और महत्वपूर्ण हैं, ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम और रजब।

हज़रत इब्राहीम अलै0 के ज़माने से इन महीनों का बहुत ज़्यादा सम्मान किया जाता था, अरब इन महीनों में लड़ाई झगड़े बन्द कर देते थे, कुरआन ने इन चारों महीनों को ''अशहुरे हुरूम'' आदर और सम्मान वाले महीने, कहा है, इन महीनों में हर अच्छा और नेक काम करने का सवाब और दिनों के मुक़ाबले में कई गुना बढ़ जाता है, इन आदर वाले चार महीनों में ''मुहर्रम'' के महीने की बड़ी फ़ज़ीलत है अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कई हदीसों में इस महीने की फ़ज़ीलत और प्रतिष्ठा बयान की है और इसको अल्लाह का महीना, और सर्वश्रेष्ठ महीना फ़रमाया है, चुनांचि हज़रत अबूज़र रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि तमाम महीनों में सबसे अफ़ज़ल कौन सा महीना है तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि तमाम महीनों में अफ़ज़ल तरीन महीना अल्लाह तआला का महीना (मुहर्रमुल हराम) है इस मुबारक महीने में एक ऐसा दिन है जिसमें अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम की तौबा क़ुबूल फ़रमाई है और दूसरी क़ौमों की तौबा भी क़ुबूल फ़रमाएंगे।

(तिम्रिज़ी–74)

इसी तरह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि जो ''मुहर्रमुल हराम'' के महीने में किसी एक दिन का भी रोज़ा रखेगा तो उसको एक दिन के रोज़े के बदले में तीस दिन के रोज़ों का सवाब मिलेगा।

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि रमज़ानुल मुबारक के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़ा अल्लाह के महीने ''मुहर्रम'' का रोज़ा है, हज़रत अली रज़ि0 से लंबी रिवायत में नक़ल किया गया है कि ''तमाम महीनों का सरदार मुहर्रमुल हराम'' है।

उम्मत के बड़े उलमा ने ''अशहुरे हुरूम'' में सबसे ज़्यादा सम्मानीय और बड़ाई वाला महीना ''मुहर्रमुल हराम'' को क़रार दिया है। चुनांचि हज़रत हसन रज़ि0 की राय यह है कि सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला महीना ''मुहर्रम'' का है।

मुहर्रमुल हराम के पहले अशरे का आख़िरी दिन यानी ''यौमे आशूरा'' (मुहर्रम की दस तारीख) विशेष रूप से बहुत महत्वपूर्ण, बरकत व फ़ज़ीलत वाली तारीख़ है, इस दिन का रोज़ा रमज़ान के रोज़ों से पहले फ़र्ज़ था, नबी करीम सल्ल0 स्वयं उस दिन रोज़ा रखते और दूसरों को रोज़ा रखने का आदेश देते थे, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो देखा कि यहूदी आशूरा के दिन का रोज़ा रखते हैं, आप

सल्ल0 ने उनसे पूछा कि उस दिन रोज़ा क्यों रखते हो? उन्होंने कहा कि यह एक अच्छा और बड़ा दिन है, यही वह दिन है जब अल्लाह तआला ने बनू इस्राईल को उनके दुशमन फ़िरऔन से नजात दी तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बतौर शुकराना उस दिन रोज़ा रखा और हम भी उस दिन रोज़ा रखते हैं, ''अशरा को आशूरा'' क्यों कहते हैं? इसको अल्लामा ऐनी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''उमदतुल–क़ारी'' में बहुत तफ़सील से बयान किया है, वह फ़रमाते हैं कि उस दिन यानी मुहर्रम की दस तारीख़ को अल्लह तआला की ओर से उसके विशेष बन्दों को दस बड़े इनआम और पुरस्कार प्रदान हुए और कुछ ऐतिहासिक घटनाएं भी घटीं जिनका वर्णन निम्नलिखित हैः–

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उसी मुबारक दिन, तौबा की तौफ़ीक मिली और उसी दिन उनकी तौबा कुबूल हुई। अल्लामा कुरतुबी अपनी तफ़सीर में तहरीर फ़रमाते हैं कि ''हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को तौबा की तौफ़ीक़ मिली, और आप की तौबा की कुबूलियत उसी दिन यानी मुहर्रमुल हराम की दसवीं तारीख, जुमे के दिन हुई, इसी तरह हज़रत इकरमा रज़ि0 फ़रमाते हैं यही वह तारीख़ (दस मुहर्रम) है जिसमें अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद और हज़रत आदम की तौबा कुबूल फ़रमाई।

2. ''आशूरा'' ही के दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कशती ''जूदी'' पहाड़ पर ठहरी और तमाम मोमिनीन को कुफ़्फ़ार के जुल्म व सितम से नजात मिली, उसी के शुकराने में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने भी ''आशूरे'' का रोज़ा रखा था।

3. आशूरे ही के दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मुबारक पैदाईश हुई और उसी दिन दुनिया के सबसे बड़े और कठिन इम्तिहान ''हज़रत इस्माईल की कुर्बानी'' में कामयाब हुए, और उसी दिन हज़रत ख़लीलुल्लाह के लिए नमरूद की भड़कती आग ठण्डी हो गई।

4. यौमे आशूरा (मुहर्रम की दस तारीख़) को हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल को ''मिना'' की वादी में अल्लाह के हुक्म से अल्लाह की राह में कुर्बान कर दिया। अल्लाह ने हज़रत इस्माईल को एक जन्नती दुंबा फिदया दे कर बचा लिया।

5. यौमे आशूरा ही को कलीमुल्लाह हज़रत मूसा अलै0 के लिए दरया–ए–नील में अल्लाह के हुक्म से रास्ता बन गया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम बनू इस्राईल के साथ दरया–ए–नील पार करके फ़िरऔन और उसकी ज़ालिम फ़ौज से नजात पा गये इसी के शुकराने में हज़रत मूसा ने आशूरा का रोज़ा रखा।

6. यौमे आशूरा ही को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत बा सआदत (मुबारक पैदाइश) हुई, और उसी दिन आसमान पर उठाए गये।

7. ''यौमे आशूरा'' ही के दिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम अल्लाह के ख़ुसूसी रहम व करम से मछली के पेट से बाहर आए और उनकी तौबा कुबूल हुई।

8. ''यौमे आशूरा'' ही को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अन्धे कुवें से निकाले गये और उसी दिन उनके वालिद माजिद हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की बीनाई भी लौटाई गई और उसी दिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने वालिद माजिद से दोबारा मिले।

9. ''यौमे आशूरा'' ही को अल्लाह के नबी हज़रत अय्यूब अलै0 ''लम्बी सब्र आज़मा'' बीमारी के

बाद सेहतयाब हुए।

10. ''यौमे आशूरा'' ही के दिन हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने ''नबूवत'' के साथ दुनिया की बादशाहत अता फ़रमाई।

इस्लामी साल के पहले महीने मुहर्रमुल हराम विशेष कर ''यौमे आशूरा'' दस मुहर्रम की महानता और प्रतिष्ठा को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से आपके सामने पेश किया गया है, हमारे सम्पादकीय का शीर्षक ''इस्लामी साल का पहला महीना'' अर्थात इस्लामी कैलेण्डर का पहला महीना है।

सच्चा राही के पाठकों को मालूम होना चाहिए कि इस्लामी कैलेन्डर का आग़ाज़ हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के दौरे ख़िलाफ़त से हुआ। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 विश्व इतिहास के आदर्श शासक थे जिसका ऐतिराफ़ अपनों और गैरों सबने किया है हज़रत उमर रज़ि0 के जीवन चरित्र और शासनकाल को समझने और जानने के लिए प्रसिद्ध इतिहासकार और इस्लामी लेखक अल्लामा शिब्ली नोमानी रह0 की किताब ''अल–फ़ारूक़'' पढ़िये, हज़रत उमर फ़ारूक़ की हुकूमत का रक़बा भूमण्डल के बड़े हिस्से पर फैल गया था, दफ़्तरी कामों और सरकारी आदेशों में तारीख़ का इन्दिराज अनिवार्य है, इस बुन्यादी ज़रूरत के पेशे नज़र हज़रत उमर ने एक हंगामी (इमरजेन्सी) मीटिंग तलब की और जमाते सहाबा को जमा किया और सबसे मशवरा किया सबने अपनी अपनी राय दी लेकिन हज़रत अली रज़ि0 ने फ़रमाया कि हमारी इस्लामी तारीख़ में ''हिज़रत नबवी'' से बढ़ कर कोई वाक़िया नहीं, हमारा इस्लामी साल वहीं से शुरु होना चाहिए और इसकी शुरुआत मुहर्रम के महीने से हो, यह सब बातें उसी मीटिंग में तै हुईं। उस तारीख़ से आजतक पूरे इस्लामी जगत में सन् हिजरी का चलन है, मुस्लिम इतिहासकारों ने जो किताबें लिखीं उसमें सन् हिजरी का प्रयोग किया है। हम मुसलमानों को इस तारीख़ को नहीं भूलना चाहिए और जहां तक सम्भव हो अपने दीनी और दुन्यावी कामों में इस्लामी कैलेण्डर का प्रयोग करना चाहिए, उलमा ने इसे फ़र्ज़ किफ़ाया कहा है और इसको शिआ़रे इस्लाम यानी इस्लामी चिन्ह, बताया है।

मुहर्रमुल हराम यौमे आशूरा का जब भी ज़िक्र आयेगा तो हम शहादते हुसैन और शहादते अहले बैत को कभी फ़रामोश नहीं कर सकते हैं, इस्लामी तारीख़ का यह ऐसा दर्दनाक और अलमनाक हादिसा है जिसका दर्द और जिसकी कसक चौदा सौ साल से अब तक दिलों में मौजूद है। इस्लाम एक मुकम्मल दीन है जिसने हमें ग़म और ख़ुशी दोनों मौक़े के लिए आदेश और अहकाम दिये हैं, कुरआन में ईमान वालों की यह विशेषता बताई है कि जब उनको कोई मुसीबत पहुँचती है तो वह कहते हैं कि ''हम तो अल्लाह ही के लिए हैं और उसी के पास जाने वाले हैं'', हज़रत हुसैन रज़ि0 और उनका घराना पूरी उम्मत के लिए आदर्श हैं केवल वही नहीं बल्कि उनके बड़े भाई हज़रत हसन रज़ि0 भी पूरी उम्मत के लिए आदर्श हैं।

मौलाना सानी हसनी रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत बलन्द और खूबसूरत शब्दों में हज़राते हसनैन का परिचय कराया हैः– ''एक है सैफ़े हक़ एक सुल्ह तमाम'' यानी एक भाई सच्चाई और हक़ की तलवार है, दूसरा सुलह और संधि का पैग़ाम है अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों निवासों को ''जन्नत के नौजवानों

के सरदार'' फ़रमाया है, कितना बड़ा ज़ुल्म है कि उम्मत शहादते हुसैन की रूह और स्पिरिट को न समझ सकी, उनकी यादगार ढोल ताशों की सूरत में मनाती है, अल्लामा इक़बाल की ज़बान में–

शहादत है मतलूब व मक़सूद मोमिन
न माले ग़नीमत न किश्वर कुशाई

अल्लाह के यहाँ शहीदों का क्या मुक़ाम और मरतबा है इसको समझने के लिए सूरः आले इमरान का पहला रुकू पढ़िये–

अनुवादः– ''जो लोग अल्लाह की राह में (यानी उसके दीन के रास्ते में) मारे जाएं उनको हरगिज़ मुर्दा न समझो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने परवरदिगार के पास, उनको तरह तरह की नेमतें दी जाती हैं–

शहीदों पर अल्लाह तआला का कैसा कैसा प्यार होगा और उनको कैसे कैसे इनआमात मिलेंगे, इसका अन्दाज़ा करने के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निम्नलिखित हदीसें पढ़िए–

''जन्नतियों में से कोई शख़्स भी यह न चाहेगा कि उसको फिर दुनिया में वापस भेजा जाए, अगरचि उनसे कहा जाए कि तुमको सारी दुनिया दे दीजायेगी, लेकिन शहीद इसकी तमन्ना करेंगे कि एक दफ़ा नहीं, उनको दस दफ़ा फिर दुनिया में भेजा जाए ताकि हर दफ़ा वह अल्लाह की राह में शहीद हो के आएं– उन्हें यह आरज़ू शहादत के ऊँचे दर्जे और उसके ख़ास इनआम को देख कर होगी''।

शहादत की तमन्ना और उसके शौक़ में खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाल यह था कि एक हदीस में इरशाद फ़रमाया–

क़सम उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है मेरा जी चाहता है कि मैं अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाऊँ फिर मुझे ज़िन्दा कर दिया जाए, और फिर मैं क़त्ल किया जाऊँ फिर मुझे ज़िन्दगी बख़्शी जाए और फिर मैं क़त्ल किया जाऊँ नबी करीम सल्ल0 के इन कलिमात के पढ़ने के बाद अन्दाज़ा होता है कि शहादत की क्या फ़ज़ीलत है और अल्लाह के यहाँ शहीद का क्या मरतबा और मुक़ाम होगा, जिसकी तमन्ना और आरज़ू अल्लाह के नबी बार–बार कर रहे हैं।

❖❖❖

वर्षा

–मुर्तज़ा साहिल तस्लीमी

गर्मी से जनता व्याकुल
मनुष्य सब घबराते हैं।
सागर से शीतल जल लेकर
बादल दौड़े आते हैं।
अम्बर पर घनघोर घटा
यह कैसी काली काली है।
वातावरण मनोहर है
अब वर्षा होने वाली है।
रिमझिम रिमझिम स्वर में वर्षा
अमृत लेकर आएगी।
युग–युग की प्यासी धरती अब
अपनी प्यास बुझाएगी।
भीनी–भीनी मानसून की
चली पवन मतवाली है।
वातावरण मनोहर है
अब वर्षा होने वाली है।
गर्मी–सर्दी हो या सुखः दुखः
जितने जीवन धारी हैं।
सारी सृष्टि जिसने रची है
सब उसके आभारी हैं।
क्षण भर में कुछ से कुछ कर दे
उसकी शान निराली है।
वातावरण मनोहर है
अब वर्षा होने वाली है।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दोजख़ :-

अनुवादः— *"और जिन्होंने नाफरमानी की तो उनका ठिकाना जहन्नम है, जब जब वो उससे निकलने का इरादा करेंगे वहीं पलटा दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा जहन्नम का वो मजा चखो जिसको तुम झूठलाया करते थे।" (अल–सजदाः20)*

जन्नत के बिल्कुल उलटा ये बहुत बड़े अजाब और सख़्त तकलीफों का वो ठिकाना है, जो अल्लाह तआला ने अपने नाफरमान और बागी बंदों के लिए तैयार किया है, इनआ़म और दण्ड, जन्नत और दोजख का ये यकीन ही इंसान को फरमाबरदारी पर तैयार करता है। दोजख की भयावह खतरों का जिक्र कुरआन मजीद में भी है और हदीसों में भी, ये भय और कठोर यातनाएं शारीरिक भी होंगी और आध्यात्मिक, और बौद्धिक भी, शारीरिक यातनाओं का जिक्र कुरआन मजीद में इस अंदाज से मिलता है—

अनुवादः— *"आग उनके चेहरों को झुलसा रही होगी और उस में उनके चेहरे बिगड़ चुके होंगे"।*

(अल–मूमिनूनः 104)

दोजख का एक और नाम "सकर" भी है जिस के बारे में इरशाद है—

अनुवादः— *"और आप जानते भी हैं जहन्नम क्या है, न बाकी रखेगी न छोड़ेगी, जिस्म को झुलसा डालेगी"।*

(अल–मुद्दस्सिरः 27–29)

और इरशाद फरमाया—

अनुवादः— *"हरगिज नहीं वो एक भड़कती हुई आग है, जो खाल खींचने वाली है"।*

(अल– मआरिजः 15–16)

पीने को गरम पानी मिलेगा, जिस से आँतें निकल पड़ेंगी।

अनुवादः— *"और उनको खौलता हुआ पानी दिया जाएगा तो वो उनकी आंतों को काट कर रख देगा"।*

(मुहम्मदः 15)

गरम पानी के साथ पीने के लिए पीप दिया जाएगा—

अनुवादः— *"सिवाय खौलते हुए पानी और बहते पीप के"। (अल–नबाः 25)*

उनके ऊपर से गरम पानी डाला जाएगा जो उनके जिस्मों को काट कर रख देगा।

अनुवादः— *"उनके सिर के ऊपर से खौलता पानी डाला जाएगा, उससे उनके पेट की सब चीजें और खालें गल जाएंगी, और उनके लिए हथौड़े होंगे"।*

(अल हजः 19–21)

जख़्मों के धोवन की खूराक दी जाएगी।

अनुवादः— *"और न उनके लिए कोई खाना है सिवाय जख़्मों के धोवन के"।*

(अल–हाक्कहः 36)

आग के कपड़ों का लिबास होगा—

अनुवादः— *"तो जिन्होंने इंकार किया उनके लिए आग का लिबास तैयार किया गया है"। (अलहजः 19)*

गले में पट्टे और जंजीरें होंगी।

अनुवादः— *"जब पट्टे और बेड़ियाँ उनकी गरदनों में पड़ी होंगी वह घसीट कर लाए जाएंगे। (अल–मोमिनः 71)*

अनुवादः— *"निश्चित रूप से हमने इनकार करने वालों केलिए बेड़ियाँ और पट्टे और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है"। (अल–दहरः 4)*

अनुवादः— *"और आप उस*

दिन मुजरिमों को देखेंगे कि वो बेड़ियों में जकड़े होंगे''।

(इब्राहीमः 49)

ये तकलीफें ऐसी सख्त होंगी कि दिल उन से जल कर कबाब होंगे, अल्लाह तआला फरमाता है–

अनुवादः– *''वो अल्लाह की भड़काई हुई आग है, जो दिलों तक जा पहुँचेगी''।*

(अल–हुमजहः 6–7)

इन सख़्त शारीरिक तकलीफों के साथ उनके साथ बहुत ही जिल्लत का सुलूक भी होगा, जिससे दिल कट कट कर रह जाएंगे, अल्लाह फरमाता है कि उनको संबोधित कर के कहा जाएगा–

अनुवादः– *''बस आज तुम्हें अपमानजनक अजाब की सजा मिलेगी''।*

(अल–अहकाफः 20)

उनसे कहा जाएगा कि तुमने दुनिया में अल्लाह को भुला दिया, आज तुम्हें भुलाया जाता है–

अनुवादः– *''इसी तरह हमारी निशानियाँ तुम्हारे पास आई थीं तो तूने उन्हें भुला दिया था और आज वैसा ही तुम्हें भुलाया जा रहा है''। (ताहाः 126)*

इस जिल्लत व रुसवाई को महसूस करेंगे और दिल ही दिल में पछताएंगे।

अनुवादः– *''और वो जब अजाब देखेंगे तो अंदर ही अंदर पछताएंगे''।*

(यूनुसः 54)

अनुवादः– *''हाय अफसोस कि मैंने अल्लाह के हक में कमी की''।*

(अल–जुमरः 56)

उनको उस वक़्त माफी मांगने की भी इजाजत न होगी।

अनुवादः– *''आज तुम माफी न मांगो''।*

(अल–तहरीमः 7)

न उनको रहीम खुदा से बात करने का मौका दिया जाएगा, ऐलान होगा।

अनुवादः– *''उसी में धँसे रहो और मुझसे बात भी मत करना''।*

(अल–मूमिनूनः 108)

दोजख और उसके भयानक रूप अल्लाह के बागी और ना फरमानों केलिए होंगी, फिर उनकी दो किस्में होंगी, एक क़िस्म उन लोगों की होगी जो अल्लाह का इनकार करने वाले हैं, या उन्होंने अल्लाह को पहचानने से इनकार किया, और उसके साथ दूसरों को शरीक किया, हकीकत में जहन्नम ऐसे लोगों के लिए है, वो हमेशा हमेश उसी में जलील हो कर पड़े रहेंगे, इरशाद होता है।

अनुवादः– *''बेशक जिन्होंने कुफ्र किया अगर उनके पास जमीन भर चीजें हों और उतना ही और भी हो, ताकि वो उसको बदले में दे कर कयामत के दिन अजाब से छूट जाएं तो भी ये सब चीजें उनकी तरफ से कुबूल न होंगी और उनके लिए दर्दनाक अजाब है''।*

(अल–माइदाः 36–37)

दूसरी जगह इरशाद है–

अनुवादः– *''और पैरवी करने वाले कहेंगे कि अगर हम को एक मौका और मिल जाए''। (अल–बकरहः 167)*

एक जगह नियम बयान कर दिया गया कि–

अनुवादः– *''बेशक अल्लाह इसको मॉफ नहीं करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और इसके अलावा जिसको चाहता है मॉफ कर देता है''।*

(अल–निसाः 48)

❖❖❖

अनुरोध

अगर आपको ''सच्चा राही'' की सेवायें पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि ''सच्चा राही'' के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(सम्पादक)

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

मुसलमानों के दो बड़े त्योहारः–

मुसलमानों के दो बड़े त्योहार ईदुल–फित्र और ईदुल अजहा हैं, जिनको ईद व बकरईद के नाम से भी याद किया जाता है। ईद रमज़ान के महीने के अन्त और शव्वाल की पहली तारीख को होती है। चूंकि रमजान का महीना रोज़ों का महीना है, और हव धैर्य तथा संयम, उपासना तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं में व्यस्त रहने में बीतता है इसलिए रमजान की उन्तीस तारीख को सूर्य अस्त होने के समय मुसलमानों की निगाहें आसमान पर होती है, और प्रत्येक आयु एवं वर्ग के लोग चांद की खोज में व्यस्त होते हैं, उन्तीसवीं को चांद दिखाई नहीं देता तो अगले दिन फिर रोजा रखा जाता है और तीस का चांद निश्चित रूप से हो जाता है। जैसे ही चांद पर दृष्टि पड़ती है, चारों ओर मुबारक, सलामत की पुकार होने लगती है, बच्चे खानदान के बुजुर्गों तथा महिलाओं को ईद का शुभ सन्देश सुनाते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं, जो लोग पढ़े लिखे हैं और सुन्नत के अनुसार कर्म करने का प्रयत्न करते हैं, वह चांद देख कर यह दुआ पढ़ते हैंः–

(ऐ चांद) मेरा और तेरा मालिक अल्लाह है, तू हिदायत और भलाई का चांद है। ऐ अल्लाह! इस महीने को हमारे ऊपर शान्ति एवं ईमान, सलामती तथा आज्ञा पालन और अपनी प्रसन्नता प्राप्ति की क्षमता के साथ आरम्भ फ़रमा।

ईद की नमाज़ः–

मुसलमान ईद की नमाज़ पढ़ने जब जाते हैं तो मार्ग में खुदा का गुणगान तथा कृतज्ञता के शब्दों का मन्द स्वर में उच्चारण करते हुए जाते हैं। मसनून यह है कि एक मार्ग से ईदगाह जाय और दूसरे मार्ग से वापस आए, ताकि दोनों ओर खुदा की बड़ाई और मुसलमानों की उपासना के प्रति अभिरुचि तथा एकत्व महिमा का प्रदर्शन हो जाय। ईद का खुत्बा समाप्त होते ही लोग एक दूसरे से गले मिलना आरम्भ कर देते हैं।

गईदगाह से वापसी पर लोग घरों पर ईद मिलने जाते हैं और एक दूसरे का मिठाई अथवा मीठी वस्तु द्वारा सत्कार करते हैं। इस अवसर पर सिवईयों का ऐसा प्रचलन हो गया है कि वह ईद का एक प्रतीक *(SYMBOL)* बन गई हैं, इसका भी सम्बन्ध विशेषकर हिन्दुस्तान से है दूसरे इस्लामी देशों में किसी भी प्रकार की मिठाई एवं इत्र से सत्कार किया जाता है।

बक़रईद में कुर्बानी का आयोजन तथा उसकी महानताः–

ईदुल–अज़हा (बक़रईद) में केवल कुर्बानी की जाती है। इसमें सदक–ए–फ़ित्र नहीं दिया जाता। इसके अतिरिक्त एक अन्तर यह भी है कि ईद शव्वाल मास की पहली तारीख को होती है, जबकि बक़रईद ज़िलहिज की दसवीं तारीख को होती है। यह वह दिन है जब कि मक्का मुकर्रमा में हाजी हज की समस्त प्रक्रियाओं से फ़ारिग़ हो जाते हैं, और मिना में अल्लाह के ज्ञान, ध्यान, उपासना, कुर्बानी में व्यस्त होते हैं। दूसरा अन्तर यह है कि ईदुलफित्र एक दिन की होती है जब कि ईदुलअज़हा तीन दिन (10,11,12 जिलहिज)। ईदुल अज़हा की नमाज़ तो एक ही दिन अर्थात 10 जिलहिज को पढ़ी जाती है, परन्तु कुर्बानी 12, जिलहिज को सूर्य अस्त होने तक की जा सकती है। ईदुल–

अज़हा के अवसर पर एक बात यह भी है कि 9, जिलहिज की फ़ज्र की नमाज़ के बाद से 13 जिलहिज की अस्र की नमाज़ तक हर फर्ज़ नमाज़ के बाद कुछ विशिष्ट शब्द ऊँची आवाज़ में कहे जाते हैं, जिनमें अल्लाह का गुण गान होता है। इनको तकबीराते तशरीक कहते हैं जिनका अर्थ निम्नलिखित हैः–

अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है– अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह ही का शुक्र अदा किया जाता है।

कुर्बानी के गोश्त के तीन भाग किये जाते हैं। एक भाग अपने घर वालों और अपने प्रयोग तथा अतिथ्य हेतु दूसरा भाग मित्रों एवं पड़ोसियों के लिए और तीसरा भाग अनाथों तथा गरीबों के लिए। यह दिन खान पान हेतु निर्धारित किये गये हैं और ईदुल–फ़ित्र के एक दिन तथा ईदुल–अज़हा के तीनों दिना रोज़ा रखना मना है। सामान्यतः मुसलमान ईदुल–अज़हा के दिन सन्तुष्टि पूर्ण खाते पीते हैं और बहुत से लोगों को वह वस्तुएं उपलब्ध हो जाती हैं और गोश्त की इतनी मात्रा खाने में आती है जो बहुधा साल भर उपलब्ध नहीं होती।

दोनों त्योहार मुसलमानों के अर्न्राष्ट्रीय त्योहार हैंः–

ईदुल–फित्र तथा ईदुल–अज़हा मुसलमानों के विश्वव्यापी एवं अन्तर्राष्ट्रीय तयोहार हैं, लगभग समस्त देशों में चाहे वह देश बहुसंख्यक हों अथवा अल्पसंख्यक, उनके मनाने के ढंग और उनके व्यावहारिक तथा धार्मिक स्वरूप में कोई विशेष अन्तर नहीं, और यह उन समस्त धार्मिक क्रियाओं तथा प्रथाओं की विशेषता है, जो कुर्आन मजीद और हदीस शरीफ़ से प्रमाणित तथा मुसलमानों में निरन्तर एवं अनवरत रूप से चली आ रही है।

दूसरे त्योहारः–

अब हम यहां उन त्योहारों का वर्णन करते हैं, जो किसी सीमा तक स्थानीय एवं स्वदेशी हैं और जिनमें से कुछ का महत्व केवल भारत वर्ष में हैं, और उनमें बहुत से ऐसे तथ्व एवं अनेक बातें सम्मिलित हो गई हैं जो हिन्दुस्तान के बाहर कोई मान नहीं रखतीं या उनके मनाने के ढंग भिन्न हैं।

12, रबीउल–अव्वल का हर्ष एवं उल्लास पूर्ण उत्सवः–

इन त्योहारों और हर्ष एवं उल्लासपूर्ण उत्सवों में सबसे अधिक महत्व एवं सार्वजनिकता 12, रबीउल–अव्वल को प्राप्त है। इस्लामी कलेण्डर के हिसाब से वर्ष के तीसरे महीने रबी–उल–अव्वल की 12, तारीख को पैग़म्बरे–इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म हुआ था। संसार के अधिकांश देशों में इस दिन खुशी मनाई जाती है। बड़े–बड़े सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है, जिनमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र एवं आदर्श जीवन, आपके संदेश तथा आपकी शिक्षाओं पर प्रकाश डाला जाता है। हिन्दुस्तान, मिस्र तथा कुछ और देशों में इन सम्मेलनों का विशिष्ट विषय जन्म के बारे में वर्णन करना होता है, इसी कारण इन सम्मेलनों को जलस–ए–मीलाद अथवा मीलाद शरीफ़ की संज्ञा दी जाती है। इसकी विभिन्न प्रणालियां प्रचलित है। जन्म का वर्णन करते समय बहुत जगह सलाम पढ़ा जाता है और उस अवसर पर सम्मान हेतु खड़े हो जाने का प्रचलन है, जिसको क़याम (खड़े होना) कहते हैं। इस अवसर पर रोशनी एवं सजावट और विशेष रूप से पिंडाल सजाने का रिवाज हो गया है। मिठाई बांटने का भी आम रिवाज है। धर्म सुधारक संस्थाएं और अधिकांश यथार्तवादी

विचारधारा रखने वाले विद्वान तथा ज्ञानी पुरुष, इन समारोहों को जो मीलाद की मजलिसों का आवश्यक अंग बन गये हैं, इसके विरुद्ध हैं। वह इन समारोहों को सरल तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने के आवाहन करते हैं और इनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन चरित्र से सम्बन्धित सच्ची प्रमाणिक घटनाओं तथा आपके सन्देशों का प्रचार एवं प्रसार करने तक सीमित देखना चाहते हैं, और उस बड़ी धनराशि को जो साज सज्जा तथा रोशनी आदि की सजावट में पानी की तरह बहाई जाती है और जिसका अनुमान केवल हिन्दुस्तान में कई करोड़ रूपया वार्षिक तक लगाया जाता है, उन अवसरों पर व्यय करने का आवाहन करते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षानुसार और मुसलमानों तथा मानव जाति के लिए अधिक लाभप्रद हों। कुछ बड़े शहरों में इस दिन बड़े–बड़े जुलूसों के निकालने का भी रिवाज हो चला है। अब मीलाद के जलसों में नातिया मुशायरे एक आवश्यक अंग बन गए हैं, जिनका क्रम रात भर चला करता है।

मुहर्रम तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न रीति–रिवाजः–

इस्लामी कैलेण्डर के हिसाब से वर्ष का प्रथम मास मुहर्रम है। यह महीना इस्लाम से पूर्व भी तथा उसके बाद भी प्रतिष्ठा, सम्मान तथा मान मार्यादा का महीना समझा जाता था, और बहुत सी शुभ एवं मंगलमयी घटनायें 10 मुहर्रम को घटित हुईं। जिसमें से एक महत्वपूर्ण घटना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तथा बनी इस्राईल का फ़िरऔन के अत्याचार से छुटकारा पाना, मिस्र से निकल कर सीना प्रयाद्वीप में कुशलता पूर्वक पहुंच जाना तथा फ़िरऔन का अपने लाओ लशकर सहित डूब जाना है। इसी की यादगार में मदीना मुनव्वरा के यहूदी आशूरा (10 मुहर्रम) को रोज़ा रखते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा छोड़ कर मदीना मुनव्वरा पधारे तो आपने फ़रमाया कि हमारा सम्बन्ध हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से यहूदियों की अपेक्षा कहीं अधिक है, अतः हमको उनसे अधिक खुशी मनाने और शुक्र (कृतज्ञता) अदा करने का अधिकार है, आपने स्वयं रोज़ा रखा और मुसलमानों को रोज़ा रखने का आदेश दिया। रमज़ान के रोज़े (तीस अथवा उन्तीस) अनिवार्य होने से पूर्व यही रोज़ा मुसलमानों पर फ़र्ज था। जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हुए तो आशूरा का रोज़ा ऐच्छिक तथा नफ़्ल रह गया। अब भी संसार के विभिन्न भागों में धार्मिक मुसलमान यह रोज़ा रखते हैं।

एक शोक पूर्ण घटना की याद और उससे सम्बन्धित विभिन्न वर्गों की रस्मेंः–

परन्तु इस मुबारक उल्लासपूर्ण महीने के साथ जिससे वर्ष आरम्भ होता है, एक अशोभनीय, अभाग्यपूर्ण तथा शोकजनक घटना सम्बन्धित है, जिसको याद करके हर मुसलमान का हृदय दुखी और उसकी गरदन शर्म से झुक जाती है। यह नवास–ए–रसूल, जिगर गोश–ए–बतूल, हुसैन बिन अली की शहादत है, जो ठीक आशूरे के दिन हुई वह इसी दिन यजीद के मुकाबले में लड़ते हुए (जो खिलाफ़त के तख़्त पर आसीन हो गया था, और शाम में बैठ कर उस समय के इस्लामी संसार पर प्रशासन करता था) करबला के मैदान में 10 मुहर्रम सन् 61 हिज्री को शहीद हुए, तथा उनके परिवार के अनेक युवक भी लड़ते हुए शहीद हुए। यही वह घटना है

शेष पृष्ठ ...39..पर

ख़ुदा का करम ही करम देख आए

(एक हाजी के तअस्सुरात)

—मौलाना सैय्यद मु0 सानी हसनी रह0

ज़हे क़िसमत हम भी हरम देख आए
ख़ुदा का करम था कि हम देख आए

ख़ुशा काब—ए—मोहतरम देख आए
तवाफ उसका हम दम बदम देख आए

लिपट कर और आँखों से आँसू बहा कर
दरे काब—ए—मुलतज़म देख आए

मक़ामे ब्राहीम और संगे अस्वद
उन्हें दीदओ दिल बहम देख आए

सफा और मरवा हतीम और ज़मजम
मताफ और सहने हरम देख आए

खड़े हो के मीज़ाबे रहमत के नीचे
घटा रहमते हक की हम देख आए

मिना और मुजदलफा अरफ़ात जा कर
ख़ुदा का करम हर क़दम देख आए

खुदा के हुजूर अहले होशो खिरद को
बचश्मे तर व सर ब खम देख आए

मदीने की पाकीज़ा गलियों में फिर कर
मदीने के अहले करम देख आए

बकीअ़ व उहद के मक़ाबिर मशाहिद
उन्हें जा के बा चश्मे नम देख आए

वह मिंबर से ता रौज—ए—जन्नत की क्यारी
उसे देखा गोया इरम देख आए

लबों पर दुरूदो सलाम मुसलसल
हुजूरे शफीउम उमम देख आए

बयाँ कर नहीं सकते कैफ़ियत उसकी
मुवाजह पे जा कर जो हम देख आए

जिसे कहते हैं कैफ व मस्ती का आलम
वह आलम ख़ुदा की कसम देख आए

दयारे हरम अलगरज हम पहुँच कर
ख़ुदा का करम ही करम देख आए

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

सुल्तान ज़ैनुल आबिदीन की उदारताः—

कश्मीर में सुल्तान ज़ैनुल आबिदीन (1412—1420 ई0) को फ़ारसी के अतिरिक्त हिन्दी और तिब्बती भाषा पर दक्षता प्राप्त थी। उसने अपनी राजनीतिक निष्पक्षता के साथ बौद्धिक निष्पक्षता से गतिविधियाँ भी जारी रखीं, इसको संस्कृत के विद्वानों में जीवनराज और श्रीधर पर बड़ा भरोसा था। इन दोनों ने उसी के इशारे पर संस्कृत में कश्मीर के इतिहास लिखे। सुल्तान का एक और दरबारी बौद्ध भट्ट वेदों का ज्ञाता था। उसने कश्मीरी पद्य में एक ड्रामा ज़ैन प्रकाश लिखा, जिसमें अपने स्वामी के शासनकाल का विवरण लिखा है। एक और कवि सोम पंडित ने अपनी कश्मीरी कविता ज़ैन चरित्र में सुल्तान की उपलब्धियों का उल्लेख किया है। एक और लेखक भट्ट अवतार ने ज़ैन विलास लिखी जिसमें सुल्तान के कथन हैं। सुल्तान ने एक दारुत्तर्जुमा (अनुवाद भवन) भी स्थापित किया था जिसमें फ़ारसी किताबें संस्कृत में और संस्कृत की फ़ारसी में अनुवाद होती थीं। इसी सम्बन्ध में श्रीधर ने जामी की किताब युसुफ़ जुलेख़ा का अनुवाद संस्कृत में किया और उसका नाम कथा कोतक रखा। मुल्ला अहमद संस्कृत और फ़ारसी के विद्वान थे। उन्होंने सुल्तान के आदेश से महाभारत और कल्हन की किताब राजतंरगिणी का अनुवाद फ़ारसी में किया और सुल्तान के शासनकाल के इतिहास को इसमें जोड़ा। इसके बाद.....श्रीधर ने इसमें और वृद्धि की थी और इसका नाम ज़ैन राजतंरगिणी रखा। जूनराज और श्रीधर दोनों सुल्तान ज़ैनुल आबिदीन के दरबार से जुड़े थे, श्रीधर सुल्तान को वाल्मीकी की ब्रह्म दर्शन और उसके साथ समथा पढ़कर सुनाता और उनकी व्याख्याएं भी करता जाता। इसी तरह पंडित आ कर सुल्तान को शास्त्र भी सुनाया करते थे। फरिश्ता ने अपने इतिहास में सुल्तान की राजनैतिक निष्पक्षता का उल्लेख बहुत विस्तार से किया है। जिसको संक्षिप्त रूप से इस तरह बयान किया जा सकता है कि वह स्वयं ज्ञान और कला का विशेषज्ञ था। इसलिए उसकी मजलिस या सभा मुसलमान और हिन्दू विद्वानों से भरी रहती थी। वह भवनों के निर्माण, कृषि का विकास और नहरों के जारी करने में व्यस्त रहता। उसने एक सामान्य आदेश जारी कर रखा था कि उसके देश में जिस व्यक्ति की सम्पत्ति चोरी हो जाए, उसका मुआवजा गाँव के रईस अदा करें। इस तरह चोरी उसके शासन में पूरी तरह समाप्त हो गयी थी। शिवदेव भट्ट के ज़माने में जो बुरी रीतियाँ देश में जारी थीं, उनको पूरी तरह समाप्त कर दिया। मूल्य की दरों का पंजीकरण जैसा उसके ज़माने में हुआ, पहले कभी नहीं हुआ। उसने अपने नियम और क़ानून ताँबे की प्लेटों पर लिखवा कर उन्हें हर शहर और गाँव में लगवाया,

जिससे अत्याचार समाप्त हो गया। उन प्लेटों पर यह लिखा होता कि जो व्यक्ति इन नियमों का पालन न करे, उस पर ख़ुदा की लानत हो। सुल्तान के यहाँ एक महान चिकित्सक श्रीभट्ट नाम के थे। वह उन पर बहुत भरोसा करता था। उसके कहने पर सुल्तान ने उन ब्राह्मणों को जो सिकन्दर शाह के शासनकाल में शिवदेव के अत्याचारों के कारण देश से बाहर चले गये, दूर–दराज़ जगहों से बुला लिया और उनकी सम्पत्ति वापस कर दी। हिन्दुओं के मन्दिरों में पूजा का समय निर्धारित किया, जिज़िया का आदेश निरस्त कर दिया गया, गाय का ज़बहः करना रोक दिया, ब्राह्मणों और हिन्दू न्यायाधीशों को बुला कर उनसे प्रण लिया कि वह कभी झूठ न बोलेंगे और जो कुछ उनकी धार्मिक पुस्तकों में लिखा हुआ है, उसके विरुद्ध कुछ न करेंगे। सुल्तान ने माथे पर तिलक लगाना, सती होना आदि जो सिकन्दर शाह के शासनकाल में समाप्त हो गये थे, नये सिरे से जारी किया। पेशकश, जुर्माना और दूसरे स्रोतों की रकमें जो सिकंदर प्रजा से वसूल करते थे, पूरी तरह बन्द कर दिए। उसने आदेश दिये कि सौदागर जो माल विदेशों से लाएँ, उस पर थोड़ा मुनाफ़ा रखकर बेचें और लेन–देन में भ्रष्टाचार न करें। उसके विधान में यह भी था कि जिस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की जाती, उसका ख़ज़ाना सैनिकों में बाँट दिया जाता और जो ख़िराज वहाँ की प्रजा से लिया जाता, वही वसूल किया जाता। सुल्तान विद्रोहियों और विरोधियों के कान अच्छी तरह ऐंठता रहता और उनको उच्च पदों से निचले पदों पर पहुँचा देता। वह ग़रीबों और बूढ़ों से अच्छा व्यवहार करता और उनकी देखभाल करता ताकि अमीर अधिक अमीर हो कर विद्रोही न हो जाएं और न कोई ग़रीब हो कर भिखारी हो जाए। सुल्तान की ईशपरायणता का हाल यह था कि वह ना महरम (जिनसे विवाह करना वैध हो) औरतों को अपनी माँ और बहन मानता था। किसी नामहरम औरत पर बुरी नज़र न डालता और न दूसरे की सम्पत्ति में ख़यानत करने की लालच दिल में लाता। वह प्रजा के लिए दयालु था इसलिए प्रचलित गज़ और जरीब में वृद्धि की। उसके शासनकाल में हर व्यक्ति अपनी आस्था के अनुसार अपने धार्मिक आदेशों का पालन करता, कोई व्यक्ति किसी से पक्षपात के आधार पर परहेज़ नहीं कर सकता था।

उस ज़माने के एक हिन्दू इतिहासकार श्रीधर का कहना है कि सुल्तान अपने धार्मिक कर्तव्य का कठोरतापूर्वक पालन करता था। पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ता, रमज़ान के महीने में रोज़े भी रखता। प्रशासन के मामले में शेखुल इस्लाम के परामर्श से काम करता, वह प्रतिष्ठित सूफ़ियों और उलमा का बहुत सम्मान करता लेकिन उसी के साथ ब्राह्मणों और पंडितों का भी सम्मान करता था उसने मंदिरों के मरम्मत और निर्माण की अनुमति दी और कुछ का उसने स्वयं मरम्मत और निर्माण कराया। उसने ब्राह्मणों को ऐसी ज़मीनें दीं जिनका लगान माफ़ था। मंदिरों पर ज़मीनें वक़्फ़ कीं, कश्मीर घाटी में विभिन्न पवित्र स्थलों की यात्रा के लिए आने वाले यात्रियों को मुफ़्त खाना दिया जाता था। इसके लिए जो जागीर वक़्फ़ थी, उसको सुल्तान ने और आगे बढ़ा दिया और एक भवन उन यात्रियों के ठहरने के लिए बनवाया। हिन्दुओं के त्योहारों में सम्मिलित होता। श्री ज़ैन मठ

के भिक्षु बर्तनों की पूजा का समारोह करते तो उसमें वह सम्मिलित होता, भिक्षुओं को खाना खिलाता, नागयात्रा के दिन गणचक्र के त्यौहार के ज़माने में पाँच दिन तक पुजारियों को चावल, गोश्त और फल वह स्वयं देता, चाँद की तेरहवीं तारीख़ को उन्हें रज़ाई और दूसरी चीज़ों के उपहार दे कर विदा करता। हिन्दुओं को अच्छे–अच्छे पद देने में उदारता से काम लेता। श्री भट्ट ब्राह्मण और बौद्ध धर्म के मानने वाले तिलक आचार्य उसके बड़े विश्वस्त राजनीतिक परामर्शदाता थे। श्री भट्ट उसकी न्याय व्यवस्था का संचालक था। जब उसकी मृत्यु हुई तो सुल्तान को बहुत दुख हुआ, उसने उसके लिए बहुत बड़ी रकम दान दी, कर्पूर भट्ट ब्राह्मण उसका विशेष चिकित्सक था। वह कश्मीर में इतना लोकप्रिय था कि लोग प्यार में उसको बड़ शाह कहते थे और जब उसकी मृत्यु हुई तो लोग उसके लिए चीख़–चीख़ कर रोए। उस दिन राजधानी में खाना नहीं पका और न चूल्हे से धुआँ उठा और आज भी कश्मीर में उसका नाम बहुत प्यार और मुहब्बत से लिया जाता है और हिन्दू मुसलमान दोनों में से कोई भी उसका आलोचक नहीं। उसका आदर्श भारत सरकार के लिए एक संदेश है कि एक शासक लोगों के दिलों को कैसे अधीन कर सकता है। उसने अपनी धार्मिक आस्था नहीं बदली और न लोगों को उनकी आस्थाओं के बदलने के लिए कहा! लेकिन उदारता, दानशीलता, इंसान दोस्ती और नेकी से लोगों के दिलों पर शासन करता रहा।

बौद्धिक उदारताः–

हिन्दुस्तान की आयुर्वेदिक विद्या में भी मुसलमानों ने रुचि ली। गुज़रात में मुहम्मद शाह (1458–1511 ई0) ने अरबी और फ़ारसी की महत्वपूर्ण किताबों के फ़ारसी अनुवाद का एक विशेष विभाग स्थापित किया तो उसकी फरमाईश पर बाण भट्ट भी आयुर्वेदिक किताब अष्टरंग रबी का फ़ारसी अनुवाद अली मुहम्मद बिन इस्माईल रसादली ने किया और उसका नाम शिफ़ा–ए–महमूदी रखा।

वैरागियों की उदारताः–

15वीं सदी के अन्त और 16वीं सदी के आरम्भ में वैरागियों के आन्दोलनों से बड़ी उदारता पैदा हुई। जिसको भक्ति आन्दोलन भी कहा जाता है। वैरागियों के सम्बन्ध में दबिस्तानुल मज़ाहिब में हैः–

वैराग का अर्थ चाहत के होते हैं, वह दुनिया छोड़ने वाले होते हैं, उनकी इबादत में वह कविताएं होती हैं, जो विशन की प्रशंसा में कही जाती हैं। विशन के रूप में राम और कृष्ण और उन्हीं की तरह और दूसरे हैं उनकी कविताओं को विशनपद कहा जाता। और विशन के जो पवित्र स्थान उनसे जुड़े हैं, वहां जाते हैं। तुलसी की माला गले में लटकाते हैं और उसको माला तुलसी कहते हैं। तुलसी भारत की एक लकड़ी है। हिन्दू मुसलमान जो भी चाहे उस मार्ग को अपना सकता है। किसी के लिए विरोध नहीं है। कहा जाता है कि मुसलमान भी विशन की पूजा करते हैं और जिस अर्थ में बिस्मिल्लाह प्रयोग होता है उसी अर्थ में विश और विस्म विशन कहते हैं। यह लोग विशन के व्यक्तित्व के एक होने और उसके माध्यम होने के समर्थक हैं, अर्थात उसके कोई शरीर नहीं है, आत्माओं को उसके ब्रह्मचर्य की शक्ति की छाया समझते हैं और सभी शरीरों को उसकी हस्ती का छाया मानते हैं। वह अपने को चार हाथों में प्रकट करता है।

.....जारी.....

❖❖❖

ईद कुरबाँ के बाद

मौलाना सय्यद मुहम्मदुल हसनी रह0

जिलहिज्जा का यह मुबारक महीना जो गुज़र रहा है अपने अन्दर एक खास पैगाम रखता है इसमें एक ख़ास कैफियत पाई जाती है जो हमें रमज़ान को छोड़ कर और दूसरे महीनों में नज़र नहीं आती, उसके पीछे एक अलग रंग में विशेष घटनाएं हैं, यह तारीखें वह हैं जिनमें लाखों मुसलमानों के दिल की धड़कनें एक खास वक़्त खास जगह खास पहचान, खास लिबास के साथ संबंधित होती हैं, इन सब कैफ़ियात को अगर हम एक शब्द में अदा करना चाहें तो उसको कुर्बानी के विशाल और गंभीर शब्द से अदा कर सकते हैं लेकिन यह कुर्बानी किस चीज़ की है और किसके लिए है?

बद क़िस्समती से आज कुर्बानी को सिर्फ़ बकरे अैर दुंबे की कुर्बानी के अर्थ में समझ लिया गया है। इस प्रकार थोड़े रूपये ख़र्च करके हम कुर्बानी देने वालों की सफ़ में शामिल हो जाते हैं, इसके बाद फिर हमें किसी कुर्बानी की ज़रूरत नहीं रहती, यह कुर्बानी भी बहुत ज़रूरी और सम्मान योग्य है, लेकिन इसके बाद या उसके साथ एक और कुर्बानी है जो उसके बाद शुरु होती है, आज मुसलमानों ने अल्लाह तआला के लिए कुर्बानी का मतलब सिर्फ़ यह समझ लिया है कि हर साल हज कर आया करो, वलीमा और अ़क़ीक़ा की शानदार दअ़वत कर दिया करो और बक़रईद में किसी जानवर की कुर्बानी कर लिया करो और उसके बाद साल भर चैन की बाँसुरी बजाया करो, बद क़िस्मती से कुछ लोगों ने इसमें कुछ और हराम चीज़ें शामिल कर ली हैं, इसका उद्देश्य मनोरंजन और तफ़रीह है, वह क़ब्रों पर चादर चढ़ाते हैं उसमें कव्वाली से आनंदित होते हैं, बुजुर्गों की क़ब्रों पर मेले लगाते हैं और गुनाह बखशवा कर और साल भर के लिए जन्न्त की ज़मानत ले कर वापस आ जाते हैं।

जो लोग इन बिदअ़तों से सुरक्षित और इन बुराइयों से दूर हैं वह किसी मदरसे को चन्दा देकर कोई सबील लगवा कर, किसी मस्जिद में हाफ़िज़ का इन्तिज़ाम करके यह समझ लेते हैं कि उनको अल्लाह तआला के लिए जो कुछ कुर्बानी करनी थी कर चुके, अब उनको किसी चीज़ की कुर्बानी की ज़रूरत नहीं, उसके बाद हमें शिकायत यह होती है कि अल्लाह तआला की नुसरत नहीं आती और मुसलमानों की मदद नहीं होती, याद रखिये मदद का वादा बकरे की कुर्बानी के साथ नहीं बल्कि आदत की कुर्बानी और खुवाहिश की कुर्बानी के साथ है कुरआनी आदेश है ''अल्लाह को उनका गोश्त और खून कदापि नहीं पहुंचता, हाँ उसको तो तुम्हारे दिल का तक़वा पहुंचता है''। (सूरः हज आयत–37)

अल्लाह तआला को कच्चा या भुना हुआ गोश्त, लम्बे चौड़े दस्तर ख्वानों और खुशबूदार खानों की तलब नहीं है और यह चीज़ें उसके पास नहीं पहुँचतीं उसके पास दिल का अदब व लिहाज खुदा का खौफ़ और खुदा की मुहब्बत और खुदा के लिए दिल और माल की कुर्बानी पहुंचती है और इसी में उसकी

करूणा और दया को खींचने की ताक़त है। क्या यह वास्तविकता नहीं है कि हमारे लिये सुबह से शाम तक आफ़िसों में सर खपाना, रात रात भर सरकारी ड्यूटी करना और अपने कारोबार और बिजनेस की तरक़्क़ी के लिए हर मुसीबत को खुशी खुशी बरदाश्त करना और हर तकलीफ़ को स्वीकार करना आसान है लेकिन सुबह के समय अपना बिस्तर छोड़ कर नमाज़ के लिए उठना मुश्किल है।

क्या यह वास्तविकता नहीं है कि पान, सिग्रेट, चाय में कुछ देरी हो जाए तो हमें परेशानी होने लगती है और चेहरे पर क्रोध की झलक प्रकट होने लगती है, इसके विपरीत अगर किसी वक़्त की नमाज़ क़ज़ा हो जाए, अथवा किसी का हक़ मारा जाय, कोई नाजाएज़ काम हमसे हो जाए तो एहसास तक नहीं होता।

क्या यह वास्तविकता नहीं है कि अपनी एक मामूली ख़्वाहिश और दिल के तक़ाज़े पर हम जितना रूपया चाहते हैं खर्च कर देते हैं, अपने मूड की तसकीन के लिए हर प्रकार की फुजूल ख़रची कर गुज़रते हैं और किसी उचित काम और ज़रूरत पर जिसका संबंध आखिरत के सवाब और अल्लाह के वादे पर हो थोड़े पैसे ख़र्च करके हमें ऐसा महसूस होता है कि हमने सारे गुनाहों की भरपाई कर दी।

यह कुछ वास्तविकताएं हैं, गौर से देखा जाएगा तो नज़र आयेगा कि हमारी पूरी ज़िन्दगी ऐसे उदाहरणों से भरी हुई है, उसकी वजह यह है कि हमने अपनी बुरी आदतों को सुधारा नहीं और अपनी इच्छाओं पर कोई रोक नहीं लगाई।

कुर्बानी की वास्तविकता यह है कि पहले आदमी अपने इरादे, अपनी ख्वाहिश अपनी आदत और अपने मिजाज के गले पर छुरी फेरे अपने दिल के कहने पर नहीं अल्लाह और रसूल के कहने पर चलने का फ़ैसला करे और ज़िन्दगी के हर मोड़ पर अल्लाह के डर और आखिरत में जवाबदही के ख़्याल से बुराई से अपना हाथ रोक ले और दिल पर पत्थर रख कर बुराई से दूर रहे।

हज़रत इस्माईल अलै0 जैसी हस्ती की कुर्बानी का हुक्म और इशारा इसी लिए था कि उस मुहब्बत की कुर्बानी हो जो एक चाहने वाले बाप के दिल में अपने प्रिय बेटे के लिए मौजूद होती है।

कुर्बानी की हक़ीक़त और उसकी रूह (चाहे वक़्त की कुर्बानी हो या माल की या ख़्वाहिश की या जान की) यह है कि आदमी अल्लाह के डर के सामने माहौल, समाज और हुकूमत से न डरे, अल्लाह और रसूल की मुहब्बत के सामने इन्सानों की मुहब्बत, दौलत की मुहब्बत, जाह की मुहब्बत, दूसरी तमाम मुहब्बतों से अपना हाथ खींच ले।

हदीस में आया है कि तुम में से किसी का ईमान उस समय तक पूरा नहीं होगा जब तक कि अल्लाह तआला उसको उसके माल, बीवी बच्चों और उसकी जान से ज़्यादा प्रिय न हो।

कुर्बानी का यही वह अकेला रास्ता है जिस पर चल कर अल्लाह के कुछ बन्दों ने पूरी इन्सानियत की क़िसमत बदल दी और अपनी हक़ीक़त और वास्तविकता समझ ली थी।

अल्लाह की मदद प्राप्त करने के लिए आज भी यही एक रास्ता है, इसमें बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक आज़ादी और मजबूरी का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता।

❖❖❖

ख़लीफ़ा के चयन में हज़रत उमर की रहनुमाई

इं0 जावेद इक़बाल

भारतीय उपमहाद्वीप के मशहूर शायर डॉ० मुहम्मद इक़बाल ने हुकूमत साजी के वर्तमान तरीक़े पर टिप्पणी करते हुए यह शेअर कहा था।

जम्हूरियत एक तर्ज़े हुकूमत है कि जिस में।
बन्दों को गिना करते हैं, तौला नहीं करते।।

जिस में उन्होंने हुकूमत की निर्वाचन पद्धति की ख़राबी की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहा था, क्योंकि इस तरीक़े में वोट का अधिकार प्रत्येक नागरिक के लिए समान रखा गया है। चाहे व्यक्ति आलिम फ़ाज़िल हो, (पंडित ज्ञानी हो), दार्शनिक हो, वैज्ञानिक हो, डाक्टर– इंजीनियर हो, सारांश यह है कि कितना भी बड़ा बुद्धिमान हो मगर वोट के अधिकार के मामले में वह किसी भी अनपढ़, मन्दबुद्धि वाले, जाहिल–गँवार, अंगूठा टेक के बराबर ही माना जाता है।

इस समय हमारा मकसद वर्तमान समय की आधी अधूरी जम्हूरियत (लोकतंत्र) पर कोई टिप्पणी करना नहीं है, बल्कि शासक या ख़लीफा के चयन करने का वह तरीक़ा बयान करना मक़सद है जिसकी ओर हज़रत उमर रजि० ने रहनुमाई फ़रमाई थी। निःसंदेह हज़रत उमर के अनेक शानदार कारनामों में से एक ख़लीफ़ा के चयन का तरीक़ा भी है।

एक मजूसी गुलाम फीरोज़ ने जब हज़रत उमर रज़ि० पर क़ातिलाना हमला किया और लोगों को उनके बच पाने की कोई उम्मीद न रही तो उनके ख़ास साथियों (सहाब–ए–रसूल) ने आग्रह किया कि वे अपने बाद ख़लीफ़ा का चयन करदें। तब हज़रत उमर ने फरमाया यह बड़ी ज़िम्मेदारी का काम है, यदि अबू उबैदा ज़िन्दा होते तो मैं उन्हें ख़लीफ़ा बना देता। क़यामत के दिन यदि इस बारे में मुझसे सवाल होता तो मैं कह देता कि मैंने तेरे रसूल को यह फरमाते हुए सुना था कि अबू उबैदा इस उम्मत के अमीन हैं। और यदि अबू हुजैफा के आज़ाद किए हुए गुलाम सालिम रजि० ज़िन्दा होते तो मैं उनको भी ख़लीफ़ा बना सकता था। क़यामत के दिन अगर सवाल होता तो कह देता कि मैंने तेरे रसूल को यह कहते हुए सुना था कि सालिम अल्लाह से बहुत मुहब्बत करने वाले बन्दे हैं। किसी ने हज़रत उमर के बेटे हजरत अब्दुल्लाह का नाम पेश किया तो कहने लगे मैं किसी ऐसे व्यक्ति को ख़लीफा कैसे बना सकता हूँ जिसने अपनी पत्नी को गैर शरई तरीक़े से तलाक़ दी हो?

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने 6 लोगों के नाम पेश किये, कहा कि तुम लोग आपस में मशविरा करके किसी एक का चयन कर सकते हो। उन 6 हज़रात के नाम ये हैं:–

(1) हज़रत उस्मान रज़ि०
(2) हज़रत अली रज़ि०
(3) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि० (4) सअ़द बिन अबी वक़ास रज़ि० (5) हज़रत जुबैर बिन अल अव्वाम रज़ि० और (6) हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि0।

हज़रत उमर रजि० के निकट ये छः हज़रात ख़िलाफत का भार उठाने के लायक़ थे। इसका कारण भी उन्होंने स्वयं ही बताया। एक तो यह कि सभी हजरात ''अशर–ए–मुबश्शरा'' में से थे अर्थात इन्हें इनके जीवन काल ही में जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दी गई थी,

दूसरे यह कि रसूल्लाह सल्ल० ज़िन्दगी भर इन सबसे ख़ुश रहे तीसरे यह कि ये सब रसूल्लाह सल्ल० के निकट सम्बन्धी थे और चौथे यह कि उस समय यह सब उम्मत के सरदार और रहनुमा की हैसियत रखते थे।

हज़रत उमर रजि० ने ताकीद की कि उनकी मौत के बाद ख़लीफा के चयन की कार्यवाही शुरू कर दी जाए, तीन दिन के अन्दर अन्दर फैसला हो जाना चाहिए। हज़रत तलहा रज़ि० जो उन दिनों मदीना नगर में मौजूद नहीं थे, उनके बारे में कहा कि यदि तीन दिन के अन्दर वह लौट आयें तो मशविरे में शामिल हो जायें मगर उनकी प्रतीक्षा न की जाए। हज़रत उमर को शन्का थी कि सम्भवतः चयन प्रक्रिया में कोई मतभेद हो सकता है। उस सूरतेहाल से निपटने के लिए उन्होंने कुछ उपाय किए।

(1) अपने बेटे हजरत अब्दुल्लाह को मशविरा कमेटी में इस शर्त के साथ शामिल कर दिया कि वह केवल मशविरा दे सकेंगे मगर ख़लीफा नहीं बनाए जायेंगे।

(2) फैसला बहुमत के आधार पर किया जाएगा।

(3) यदि तीन किसी एक पर सहमत हों। और तीन किसी दूसरे पर तो फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर मध्यस्थता करेंगे, जिसकी ओर उनका मत होगा वही ख़लीफ़ा बनाया जाएगा।

(4) और यदि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के मत को स्वीकार न किया जाए तो फिर अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि0 जिसके पक्ष में हों उसको ख़लीफा बना दिया जाए।

हज़रत उमर रज़ि0 का देहान्त हो गया, तदफ़ीन के बाद ख़लीफा के चयन की कार्यवाही आरम्भ हो गई। हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि० ने कमेटी के कन्वेनर की भूमिका निभाते हुए सभी सदस्यों को जमा किया, हजरत तलहा रज़ि० मदीने के बाहर होने के कारण मीटिंग में शामिल नहीं थे। मीटिंग आरम्भ हुई, हज़रत अब्दुर्रहमान ने ख़ुदा का ख़ौफ दिलाते हुए फितना व फ़साद से बचने, इन्साफ़ के आधार पर फैसला करने, कड़वी कसैली, व्यंगात्मक और उत्तेजित करने वाली भाषा का प्रयोग न करने आदि पर आधारित दिलों को छू लेने वाली तक़रीर की, इस के जवाब में हज़रत उस्मान, हज़रत जुबैर और हजरत सअ़द रज़ि० ने अपनी पूर्ण सहमति का यक़ीन दिलाया। इसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान ने एक तज़वीज़ पेश की, उन्होंने कहा कि तुम में से खुशी के साथ कौन तैयार है कि अपने हक़्के ख़िलाफत को छोड़ दे, यानि खिलाफ़त के पद को त्याग दे। जो ऐसा करेगा उसे यह हक़ हासिल होगा कि वह अन्य चारों में से जिसे उपयुक्त समझे, उसे ख़लीफा बना दे।

इस तजवीज़ को सुनकर मजलिस में ख़ामोशी छा गई किसी ने भी ख़लीफा का पद छोड़ने पर आमादगी जाहिर न की। आखिर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि० ने स्वयं को ही इस कुर्बानी के लिए पेश कर दिया। अब ख़लीफा के पद के लिए चार उम्मीदवार बाक़ी बचे।

(1) हज़रत उस्मान रज़ि०
(2) हज़रत अली रज़ि०
(3) हज़रत सअद रज़ि०
(4) हज़रत जुबैर रज़ि०

हज़रत अब्दुर्रहमान रजि० ने क्योंकि ख़लीफा का पद स्वेच्छा से छोड़ा था इसलिए ख़लीफा का चयन करने की जिम्मेदारी उन्हीं पर थी, लिहाज़ा उन्होंने चारों उम्मीदवारों से अलग अलग एकान्त में मुलाकातें कीं

और प्रत्येक से कहा कि आपकी इस्लाम के लिए बहुत बड़ी बड़ी कुर्बानियाँ हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं ,और आप स्वयं को ख़लीफा के पद के लिए उपयुक्त भी समझते हैं, यह अनुचित भी नहीं है मगर आप अपने अतिरिक्त सबसे अधिक उपयुक्त किसे समझते हैं?इस सवाल के जवाब में हजरत उस्मान रज़ि० ने हज़रत अली रजि० का नाम लिया, हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत उस्मान रजि० का नाम लिया, हज़रत सअद रज़ि० और हज़रत जुबैर रज़ि० दोनों ने हज़रत उस्मान रज़ि० का नाम लिया। इस तरह हज़रत अली रज़ि० के पक्ष में केवल एक और हज़रत उस्मान रज़ि० के पक्ष में तीन वोट आए। अतः हज़रत उस्मान को बहुमत प्राप्त हो गया। इसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि0 उम्मीदवारों की इस मजलिस के अतिरिक्त अन्य सहाब–ए–किराम और प्रमुख लोगों से मुलाक़ात करने के लिए निकल पड़े। एकान्त में वह जिससे भी मिले उसने या तो हज़रत उस्मान के हक़ में राय दी या हज़रत अली के पक्ष में। किसी ने भी कोई तीसरा नाम नहीं लिया। अब अवाम की राय को हज़रत उस्मान और हज़रत अली के सामने रख कर हज़रत अब्दुर्रहमान ने दोनों से एक सवाल किया। उन्होंने पूछा ऐ अली क्या तुम अल्लाह की किताब, रसूल्लाह की सुन्नत और अबू बकर व उमर के तरीक़े पर चलने का अहद (संकल्प) करते हो? तब हज़रत अली रज़ि० का जवाब था कि मैं अपनी ताक़त और अपनी अक़्ल व फहम के अनुसार अमल करूँगा। यही सवाल जब हज़रत उस्मान के सामने रखा गया तो उन्होंने कहा ''हाँ''।

यह तीसरा दिन था तुरंत ही मस्जिदे नबवी में आम मुसलमानों का सम्मेलन बुलाया गया, उन सब की मौजूदगी में हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि0 ने फिर से इस सवाल को दोनों। हज़रात के सामने रखा और दोनों ने वही पहले वाला जवाब दिया।

इसके बाद फौरन ही हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत उस्मान के हाथ पर बैअत करली अर्थात हज़रत उस्मान को खलीफ़ा घोषित कर दिया और फिर सभी उपस्थित जनों ने हज़रत उस्मान के हाथ पर बैअत करली। यह तीसरा दिन था हजरत तलहा रज़ि0 भी मदीना लौट आए थे, उन्होंने भी बैअत कर ली।

ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि0 की यह राहनुमाई लोकतंत्र में मतदान की अहमियत और उसके तरीक़े को उजागर करती है। इस तरीक़े में ख़लीफ़ा के महत्त्वपूर्ण पद के लिए उपयुक्त व्यक्तियों का चयन पहले कर लिया जाता है, उसके बाद ख़ुदा का ख़ौफ रखने वाले, ईमानदार, समझदार, निःस्वार्थ लोगों से उनके बारे में राय ली जाती है जिसे आजकल की ज़बान में मतदान कह सकते हैं, मगर इस मतदान में समाज के चुनिंदा लोगों को ही शामिल किया जाता है, बेशऊर नासमझ झूठे जाहिल और मक्कार लोगों को इसमें शामिल नहीं किया जाता। लोकतंत्र में विपक्ष का भी विशेष महत्व होता है मगर हज़रत उमर के मार्गदर्शन में विपक्ष के प्रति बहुत कठोर नीति नज़र आ रही है जिसका कारण सम्भवतः यह है कि हज़रत उमर रज़ि0 उम्मत में किसी भी प्रकार की फूट पड़ने की गुन्ज़ाइश नहीं छोड़ना चाहते थे। विपक्ष का महत्व उसी समय तक है जब तक उसका विरोध और उसकी

शेष पृष्ठ ...28..पर

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक शख्स ने एक लावल्द व लावारिस बूढ़ी औरत की जमीन पर यह समझते हुए मकान बना लिया कि इस का वारिस कोई नही है, इनकी वफात के बाद कोई भी काबिज हो जाएगा और मैं पड़ोसी हूँ, मुझे इसका हक़ है। क्या ऐसा करना शरअ़न दुरुस्त है?

उत्तरः मालिक की इजाज़त के बिना जमीन पर क़ब्ज़ा करना और मकान बनाना जाइज़ नही है। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने किसी की ज़मीन एक बालिश्त भी लेने पर आखिरत में सख्त सज़ा की वईद सुनाई है। फिर पड़ोसी वारिस नहीं होता, लिहाज़ा मालिक की इजाज़त के बिना उस ज़मीन पर मकान बनाना जाइज़ नही है। उस शख्स को चाहिए कि किसी तरह उस बूढ़ी औरत को कीमत दे कर या हिबा के तौर पर मकान की ज़मीन हासिल करे, वर्ना आख़िरत में सख़्त अज़ाब में मुब्तला होना होगा।

प्रश्नः बाप के माल में से बाप की इजाज़त के बिना बालिग़ बच्चों के लिए तसर्रुफ जाइज़ है या नहीं?जब कि बाप इस पर राजी नही है, और बेटे अपना हक समझते हैं, शरीअत क्या कहती है?

उत्तरः बाप की इजाज़त के बिना बालिग़ लड़कों के लिये बाप के माल में तसर्रुफ जाइज़ नहीं है, हदीस में आता है कि किसी की मर्जी के बिना उसके माल में दूसरे शख्स का तसर्रुफ करना जाइज़ नहीं है। (मिश्कात 255)

प्रश्नः एक असर व रुसूख रखने वाले शख्स ने एक दूसरे सख्स की जमीन पर रिफाहे आम की खातिर एक शादी खाना बनवा दिया, ताकि पूरे महल्ले के लोग इससे फाइदा उठाऐं, क्या शरअ़न इसकी इजाज़त है?

उत्तरः किसी भी ज़मीन पर उसकी इजाज़त के बिना आम लोगों के फाइदे के लिये शादी खाना बनाना या किसी तसर्रुफ में लाना जाइज़ नही है, बल्कि हदीस में इसके बारे में सख्त वईद आई है कि जो शख़्स किसी की एक बालिश्त ज़मीन गसब करेगा तो सातों जमीन का तौक़ बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा, लिहाज़ा ज़मीन की क़ीमत देकर ज़मीन वाले को राज़ी करना बहुत ज़रूरी है। (बुखारी 454/2)

प्रश्नः सरकारी ज़मीन पर मस्जिद बनाना जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः सरकारी ज़मीन पर सरकारी इजाज़त के बिना मस्जिद बनाना जाइज़ नही है। फुक़हा ने सराहत के साथ लिखा है कि गसब करदा ज़मीन पर मस्जिद बनाना और उसमें नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तहरीमी है।

(रद्दुल मुख्तार 381/1)

प्रश्नः एक शख्स ने अपना मकान बनाने के लिये अपनी एक ज़मीन को घेर रखा है, लेकिन मुहल्ले के लोग उसकी इजाज़त के बिना उस ज़मीन पर मुख्तलिफ तरह के प्रोग्राम करते रहते हैं, क्या ऐसा करना जाइज़ है?

उत्तर: मालिक की इजाज़त के बिना उसकी ज़मीन पर किसी तरह का तसर्रुफ जाइज़ नही है। (रद्दुल मुख्तार 241/9)

प्रश्न: लाइट और पानी का बिना मीटर के इस्तेमाल करना या मीटर रोकने के लिये तदबीर करना कैसा है?

उत्तर: मीटर के बिना लाइट और पानी हासिल करना या मीटर को रोक देना चोरी करने में दाखिल है और चोरी इस्लाम में सख्त गुनाह है।

(सहीह बुखारी, हदीस 6782)

प्रश्न: एक शख्स ने किसी के पास कोई चीज़ अमानत रखवाई, उसके पास से वह चोरी हो गई, ऐसी सूरत में क्या इस अमानत की अदाएगी ज़रूरी है?

उत्तर: अमानत की हिफ़ाज़त में अगर कोताही न हुई हो तो उसका तावान या बदला वाजिब नहीं है, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि जिसके पास कोई अमानत रखी गई उस पर ज़िमान नहीं।

प्रश्न: एक शख्स ने अपने एक दोस्त की कोई चीज़ चुरायी थी, दोस्त का इन्तिक़ाल हो गया अब उसे बार–बार ख़्याल आता है कि उसकी तलाफी मैं किस तरह करूँ और क्या करूँ कि हक भी अदा हो जाए और अल्लाह के यहाँ पकड़ भी न हो, रहनुमाई करें।

उत्तर: अगर वह चीज़ मौजूद हो तो मरहूम के वरसा तक उसे पहुँचा दिया जाए, अगर वह चीज़ मौजूद न हो तो उसकी कीमत वरसा को दे दी जाए, अगर कोई वारिस न हो तो उसकी तरफ से ईसाले सवाब के तौर पर वह रकम सदक़ा कर दी जाए। (हिदाया 615/2)

प्रश्न: ड्राइवर से गाड़ी चलाने पर अगर गाड़ी का नुक्सान हो जाए तो उसका जामिन कौन होगा? क्या ड्राइवर की तन्ख़्वाह से इसकी तलाफी की जा सकती है?

उत्तर: ड्राइवर की हैसियत अजीरे खास की होती है, फिक्हे इस्लामी का उसूल यह है कि अजीरे खास से अगर उसकी जियादती और इरादे के बिना नुक्सान हो जाए तो वह उसका जिम्मेदार न होगा, लिहाजा ड्राइवर ने अगर जानबूझ कर गाड़ी को नुक़्सान नहीं पहुँचाया बल्कि गलती से नुकसान हुआ है तो वह जिम्मेदार नहीं होगा।

(फतवा आलमगीरी 555/3)

❖❖❖

पृष्ठ....26...का शेष

असहमति या सहमति सकारात्मक (पाजिटिव) हो, वह देश और समाज के हितों से न टकराये और असहमति को बुनियाद बना कर समाज को तोड़ने, फूट डालने का काम न करे।

वर्तमान समय में लाखों करोड़ों की आबादी वाले लोकतांत्रिक देशों में जहाँ अनेक धर्म और मत वाले लोग रहते हों और समाज में झूठे, मक्कार, बेईमान, धर्म का चुंगा या चोला लपेट कर राजनीति करने वालों की संख्या अधिक हो वहाँ हज़रत उमर वाली चुनाव पद्धति पर अमल करना संभव नहीं। है। यदि बुद्धिमान और मन्द बुद्धि वाले के वोट के भार में कोई अनुपात तय कर दिया जाए तो भी मौजूदा ज़माने के दज्जाली स्वभाव के लोग उसका नाज़ायज़ फ़ायदा उठाने से नहीं चूकेंगे। लिहाजा बन्दों को तोलने की इच्छा को महज एक सपना समझते हुए उनकी गिनती करते रहिए और दुआ करते रहिए कि गिनती भी ठीक ठाक हो जाये तो गनीमत है।

(डा० मु० जकी के लेख से इस्तिफादे के साथ) 24.5.2024

❖❖❖

इस्लाम में शिक्षा का महत्व

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

शिक्षा किसी भी समाज के विकास और प्रगति का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक होती है बल्कि समाज की सामूहिक उन्नति का भी आधार है। मुसलमानों के संदर्भ में शिक्षा का महत्व और भी अधिक हो जाता है क्योंकि यह समुदाय ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से कई चुनौतियों का सामना कर रहा है।

मुस्लिम समुदाय की शिक्षा के महत्व को समझने के लिए हमें वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों को समझना होगा। जिसके लिये अलग से लिखने की ज़रूरत होगी, लेकिन शिक्षा एक ऐसा अस्त्र है जिसके माध्यम से निम्नलिखित लाभ प्राप्त हो सकते हैंः—

1. सामाजिक सुधारः— शिक्षा समाज में व्याप्त अंधविश्वास और रूढ़ियों को समाप्त करने में मदद करती है। शिक्षित व्यक्ति तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं जिससे समाज में सुधार आता है।

2. **आर्थिक उन्नतिः**— शिक्षित व्यक्तियों को बेहतर रोजगार के अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। यह आर्थिक उन्नति समाज के समग्र विकास में योगदान करती है।

3. राजनीतिक जागरूकताः— शिक्षा राजनीतिक समझ और जागरूकता को बढ़ाती है। शिक्षित लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों को बेहतर समझते हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भाग लेते है।

4. सांस्कृतिक विकासः— शिक्षा सांस्कृतिक धरोहरों और मूल्यों की समझ को बढ़ाती है। यह सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है और विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है।

भारत में मुसलमानों की शिक्षा के संदर्भ में कई चुनौतियाँ हैं। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस) और अन्य रिपोर्टों के अनुसार मुसलमानों की शिक्षा का स्तर अभी भी अपेक्षाकृत कम है। आर्थिक असमानता, धार्मिक और सामाजिक भेदभाव इन चुनौतियों के प्रमुख कारण हैं।

समाधान के उपाय ये हैं कि मुसलमानों के लिए गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की जानी चाहिए। मदरसों के साथ—साथ आधुनिक स्कूलों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए और मुस्लिम छात्रों के लिए छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता योजनाओं को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। इसी तरह मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि महिलाओं की शिक्षा पूरे परिवार और समाज को प्रभावित करती है। उसके लिये समुदाय में शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता फैलानी चाहिए और इस कार्य में सामाजिक संगठनों व धार्मिक गुरुओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।

ये मानने में कोई गुरेज़ नहीं होना चाहिए कि शिक्षा मुसलमानों के भविष्य की चाबी है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। शिक्षा के माध्यम से मुस्लिम समाज अपनी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार कर सकता है। इसके लिए सभी स्तरों पर सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। तभी हम एक समृद्ध और प्रगतिशील समाज की कल्पना कर सकते हैं, जिसमें सभी को समान अवसर प्राप्त हो सके।

इस्लाम में शिक्षा का विशेष स्थानः–

इस्लाम, एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति के रूप में, शिक्षा को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानता है। इस्लामिक शिक्षा का उद्देश्य न केवल धार्मिक ज्ञान प्राप्त करना है, बल्कि दुनिया और आखिरत (परलोक) दोनों में संतुलित और उपयोगी जीवन जीने के लिए आवश्यक ज्ञान को भी समाहित करना है। शिक्षा, इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार, मानव के मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक विकास का मूल आधार है।

इस्लाम में शिक्षा का महत्व कुरआन और हदीस से स्पष्ट होता है। कुरआन की पहली आयत ''इक़रा'' (पढ़ो) है, जो यह दर्शाती है कि शिक्षा का महत्व कितना अधिक है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी फरमाया, ''ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान (पुरुष और महिला) पर अनिवार्य है।'' यह हदीस शिक्षा की अनिवार्यता को उजागर करती है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के बौद्धिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह आध्यात्मिक और नैतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस्लामिक शिक्षा व्यक्ति को अल्लाह के प्रति समर्पित होने, सही और ग़लत के बीच फ़र्क़ करने और नैतिकता व न्याय के सिद्धांतों का पालन करने के लिए प्रेरित करती है।

इस्लामी शिक्षा में कुरआन, हदीस, फिक़्ह (इस्लामी क़ानून) और सीरत (पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी) का अध्ययन शामिल है। यह अध्ययन व्यक्ति को धार्मिक कर्तव्यों और अधिकारों के बारे में जानकारी प्रदान करता है और उसे इस्लामी जीवन पद्धति के अनुसार जीवन जीने के लिए मार्गदर्शित करता है। इस्लाम केवल धार्मिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, वह वैज्ञानिक और दुनियावी शिक्षा को भी महत्व देता है। इतिहास गवाह है कि इस्लामी स्वर्ण युग में मुसलमान वैज्ञानिक, चिकित्सक, गणितज्ञ और दार्शनिकों ने विज्ञान और ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस्लामिक शिक्षण संस्थानों, जैसे बगदाद की बैत अल–हिक्मा (हाउस ऑफ विजडम) ने ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। एक शिक्षित समाज न केवल तकनीकी और आर्थिक प्रगति करता है, बल्कि नैतिकता और मानवता के उच्च आदर्शों को भी अपनाता है। इस्लामिक शिक्षाएं समाज में समानता, न्याय और भाईचारे को बढ़ावा देती हैं। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, ''सबसे अच्छा इन्सान वह है जो दूसरों के लिए सबसे अधिक फायदेमंद हो।'' यह शिक्षित समाज की एक महत्वपूर्ण पहचान है।

इस्लाम में महिलाओं की शिक्षा को भी विशेष महत्व दिया गया है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया, ''ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान (पुरुष और महिला) पर अनिवार्य है।'' यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा का अधिकार महिलाओं के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पुरुषों के लिए। इस्लाम ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने का अधिकार दिया है।

आज के आधुनिक समाज में इस्लामी शिक्षा की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। विश्व के कई हिस्सों में इस्लामी शिक्षण संस्थान, मदरसे और विश्वविद्यालय शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर रहे हैं और ये संस्थान धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और समाजशास्त्र जैसे विषयों में भी ज्ञान प्रदान कर रहे हैं। ◆◆

हिमालय से परे

—इदारा

हमारे देश के उत्तर में हिमालय पर्वत है। हिमालय का अर्थ है— बर्फ़ का घर। इस पर्वत की गगनचुम्बी चोटियाँ सदैव बर्फ़ से ढकी रहती है, इसी लिए इसका नाम हिमालय पड़ा। इसकी अनेक ऊँची—ऊँची चोटियाँ हैं। 'माउंट एवरेस्ट' संसार की सबसे ऊँची चोटी है। हिमालय हमारे देश की उत्तरी सीमा पर दूर—दूर तक फैला हुआ है। हिमालय के उस पार चीन है। चीन बहुत विशाल देश है। यहाँ संसार की सर्वाधिक जनसंख्या रहती है। हिमालय के उत्तरी ढलान पर चीन का एक प्रांत है, तिब्बत। तिब्बत पहले एक स्वतंत्र देश था। बाद में उसे चीन में सम्मिलित कर दिया गया। तिब्बत के निवासी अपने देश को 'बोदयुल' कहते हैं।

तिब्बत संसार का सबसे ऊँचा प्रदेश है। वहां तक पहुँचना बच्चों का खेल नहीं, लोहे के चने चबाने पड़ते हैं। बड़ी कठिन चढ़ाई है। पहाड़ों पर चढ़ने के मार्ग अत्यन्त दुर्गम हैं। कहीं ऊँचाई, तो कहीं गहरी खाई। टेढ़ी—मेढ़ी पगडंडियों से उन्हें पार करना होता है। वहां की सड़कें चौड़ी—चौड़ी नहीं हैं। रेल, मोटर, तांगा इत्यादि सवारियों का वहाँ गुज़र नहीं। अतः तिब्बती लोग सारे संसार से प्रायः अलग—थलग रहते हैं। पर्वत पर बसे इस प्रदेश तक पहुंचने का मार्ग कठिन ही नहीं, भयावह भी है। यात्री यदि तनिक भी असावधान हो जाए तो फिसल कर गहरे गड्ढ़े में जा गिरे। ये गड्ढे इतने गहरे हैं कि गिरनेवालों की हड्डी—पसली का भी पता नहीं चलता। कठिन चढ़ाई में यात्रियों की साँसें फूलने लगती हैं। कान बजने का रोग हो जाता है। अतः यहाँ के निवासी प्रायः कहीं बाहर नहीं जाते और न ही दूसरे लोग उनके पास जाने का साहस करते हैं।

तिब्बत की भूमि बंजर और पथरीली है। वर्षा भी नाम—मात्र को होती है। उपयुक्त मिट्टी और वर्षा के अभाव तथा अनुकूल मौसम न होने के कारण यहां अन्न की उपज कम होती है। कुछ पौधे उगते भी हैं तो बर्फीली हवा के कारण मुरझा जाते हैं। कहीं—कहीं थोड़ा जौ, ज्वार, बाजरा इत्यादि उगाए जाते हैं। लोगों को प्रयाप्त अन्न नहीं मिलता। पेट पालने के लिए बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है। अधिकतर लोग पशु पालते हैं। पानी, चारे की खोज में इधर—उधर घूमते रहते हैं। याक, भेड़, बकरी, खच्चर इत्यादि यहां के प्रमुख पशु हैं। तिब्बती लोग प्रायः खेमों में रहते हैं। दूध, दही, मक्खन, पनीर तथा पशुओं का मांस उनका मुख्य भोजन है। भूख से पीड़ित लोग कई—कई दिन का बासी मांस कच्चा खा जाते हैं।

याक यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण पशु है। यह बैल के सदृश होता है। इसके शरीर पर बड़े—बड़े बाल होते हैं। तिब्बत के निवासियों के लिए याक बहुत उपयोगी हैं। वे इसका दूध पीते, मांस खाते, खाल से खेमे और ऊन से वस्त्र बनाते हैं। सामान ढोने और पहाड़ी मार्ग पर यातायात का साधन भी यही है। इसके बड़े—बड़े घने बाल इसे पहाड़ी सर्दी से सुरक्षित रखते हैं।

यहाँ के निवासी चाय बहुत अधिक पीते हैं। वे चाय में दूध, मक्खन तथा जौ का आटा मिलाकर बहुत गाढ़ी कर लेते हैं।

यहाँ शिशिर ऋतु अत्यन्त भीषण होती है। बर्फ़ीली हवाओं के झोंके चलते हैं। यहां के निवासी खेमों में आग जला कर

रहते हैं और ऊनी वस्त्र पहन कर सर्दियों से बचते हैं। खेमों से बाहर याक और भेड़ें प्रायः ठंडक से ठिठुरकर मर जाती हैं। ये चरवाहे जिनकी संपत्ति ये पशु ही होते हैं, क्षण भर में दरिद्र बन जाते हैं।

तिब्बत में योगी तथा सन्यासी बहुत अधिक है। ये लोग 'लामा' कहलाते हैं और मठों में रहते हैं। पूरे प्रदेश में इन्हीं का राज्य है, ग्रामीण लोग प्रायः इन्हीं के कहने पर चलते तथा इन्हीं का आज्ञापालन करते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में इनके मठ होते हैं। ये आमतौर पर बौद्ध धर्मावलम्बी होते हैं। लेकिन इनका धर्म दूसरे देशों के बौद्धों से भिन्न और निराला है। अधिकांश लोग अनपढ़ होते हैं। अतः लामा जिस मार्ग पर चाहते हैं, उन्हें ले जाते हैं। अज्ञानता के कारण वे अंधविश्वास में जकड़े हुए हैं। ये लामाओं के तंत्र–मंत्र और टोने टोटके से बहुत डरते हैं। इनकी भाषा 'भोट' कहलाती है। इस भाषा में बौद्ध धर्म के ग्रंथ सुरक्षित है। प्राचीन काल में भारत में बौद्धों की बड़ी संख्या थी। भारत से ही भोट भाषा में अनूदित बौद्ध धर्मग्रंथ तिब्बत पहुँचे। कुछ वर्षों पहले बौद्ध धर्म के ग्रंथों को तिब्बत से खच्चरों पर लाद कर भारत लाया गया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन का इसमें बड़ा योगदान रहा। उन्होंने अथक परिश्रम से उन पहाड़ी दुर्गम मार्गों को पार किया। उन्होंने उन ग्रंथों का पालि और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया।

तिब्बत की राजधानी लहासा नगर है। यहां का शासक 'दलाई लामा' कहलाता था। उसके रहने के लिए लहासा नगर पहाड़ी पर सुन्दर भवन होते थे। वहां के निवासी दलाई लामा को ईश्वर का अवतार और उसी को शासन का अधिकारी मानते थे। जब एक दलाई लामा की मृत्यु हो जाती है तो उसके स्थान पर दूसरे का चुनाव बड़े रोचक ढंग से होता है। उनका विश्वास है कि दलाई लामा कभी नहीं मरता है। वह केवल शरीर बदलता है। उसकी आत्मा एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है। वही आत्मा नवजात शिशु के रूप में पुनः जन्म लेती है। अतएव ऐसे शिशु के कुछ लक्षण सुनिश्चित कर लिए गए। दलाई लामा की मृत्यु के पश्चात लामाओं का एक समूह उसे ढूँढने निकलता है। तत्काल जन्मे किसी बच्चे में अपने निर्धारित लक्षण देख कर उसे दलाई लामा घोषित कर देता है। महल में रख कर उसका विशेष ढंग से पालन–पोषण किया जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभ से कुछ पहले तत्कालीन दलाई लामा की मृत्यु हो गई तो उसकी गद्दी पर बिठाने के लिए तीन वर्ष की निरंतर खोज के बाद अभीष्ट शिशु मिला था, जिसे दलाई लामा घोषित किया गया। यह परम्परा अब भी जारी है।

अब तिब्बत पर चीन का अधिकार हो जाने से स्थिति बदल गई है। वहाँ लामाओं पर बड़े अत्याचार हुए। लामाओं के शासन का अंत हो गया। अतः लामा और उनके बहुत से साथी भारत में निर्वासित जीवन बिता रहे हैं। वहाँ के नागरिक इस परिस्थिति में भी शिक्षा प्राप्त करके आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। अन्य क्षेत्रों में विकास कर रहे हैं। उनपर अब प्राचीनता का प्रभाव बहुत कम है। धार्मिक प्रवृत्ति के लोग अपने निजी जीवन में धर्म का अनुकरण करते हैं।

नोटः– 2011 में 14वें दलाई लामा ने तिब्बत के राष्ट्रप्रमुख के अपने राजनैतिक अधिकार का परित्याग करके लोकतांत्रिक विधि से चुने हुए डॉ लोबसांग सांगेय को सारे अधिकार प्रदान कर दिए। इस प्रकार 370 वर्षों से चले आ रहे तिब्बत के गांदेन फोदरांग धर्मतंत्र शासन का अन्त हो गया। (1642–2011)

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

बहुविवाहः–

मुस्लिम पर्सनल लॉ के जिन भागों की सब से ज़्यादा आलोचना की गई है और अब भी की जा रही है उन में बहुविवाह के औचित्य का मसला भी है, जब कि ज़बान से तो अगरचे नहीं माना जा रहा है बल्कि सख्त आलोचना की जा रही है लेकिन हालात को देखते हुए बल्कि यूं कह लीजिए की व्यावहारिक रूप से इसके लाभ को सब ने मान लिया है बल्कि इसका प्राकृतिक ज़रूरत होना मान लिया है, सुबूत के लिए वो आँकड़े काफी हैं जो दुनिया भर के लोगों की समीक्षा कर के प्रति दिन सामने आते रहते हैं, यूरोप व अमेरिका का तो जिक्र छोड़िए यहाँ भारत में जो धार्मिक देश कहलाता है और जहां धार्मिक आदेशों पर अमल करने वालों का अनुपात दूसरे बहुत से देशों से ज़्यादा है, वहाँ 1961 के जनगणना और 1981 के सर्वे के अनुसार भी गैर मुस्लिमों में बहुविवाह का अनुपात मुस्लिमों से ज़्यादा है। (क़ौमी आवाज़, लखनऊ, 11 सितंबर 1991, नई दुनिया, दिल्ली, 17 फरवरी 1986) इसके अलावा दुनिया के अधिकांश धर्मों व देशों में हिन्दू धर्म सहित एक से अधिक पत्नियाँ रखने की अनुमति दी गई है, हिन्दू धर्म की विश्वसनीय ग्रंथों में तो न सिर्फ मर्दों बल्कि विवाहित महिलाओं को भी वास्तविक पति की मौजूदगी में कई दूसरे परूषों से शादी (नियोग) का अधिकार दिया गया है, बल्कि कुछ धर्मों में तो इसकी कोई हद ही नहीं निर्धारित की गई है। चीनी धर्म, बेकी में 120 पत्नियाँ तक रखने की अनुमति थी। (अल–मरअतु, पृष्ठः 17) इस्लाम ने तो इसकी सीमा निर्धारित कर के संतुलित कर दिया है, मजबूरन यह भी कहना पड़ रहा है कि जिन देशों या कौमों (मसलन यूरोप, अमेरिका) ने एक से ज़्यादा पत्नियाँ रखने के खिलाफ ऐसा प्रोपेगण्डा किया है कि उसके जिक्र से भी पश्चिम से प्रभावित लोग शर्माने लगते हैं, लेकिन उन्होंने चरित्रहीनता को ऐसा आम किया है कि पशुओं को भी पीछे छोड़ दिया है। (क़ौमी आवाज़, लखनऊ, 18 जून 1992)

मर्द व औरत की जिम्मेदारियों और अधिकारों के बारे में इस्लामी निर्देश व आदेशः–

सभी जानकार जानते हैं कि इस्लाम एक मुकम्मल जीवन व्यवस्था है जिसकी शिक्षाएं, निर्देश मानव जीवन के सभी पक्षों को संबोधित करते हैं, पैदाइश से लेकर मौत तक जीवन में जितने चरण आते हैं उन सब के लिए इसमें आदेश व नियम मौजूद हैं, इस समय उन सभी आदेशों का बयान और पेश करना मकसद नहीं, सिर्फ उस भाग का संक्षिप्त जिक्र मकसद है जो शादी–विवाह, तलाक व विरासत वगैरह से संबंधित है, जिसे आम तौर पर "पारिवारिक व्यवस्था" (मुस्लिम पर्सनल लॉ) कहते हैं, क्योंकि आज कल उनकी अवहेलना आम हो रही है जिसके नतीजे में मुसलमान दुनिया में भी सख़्त परेशानी का शिकार हैं और अखिरत में भी पूछ होने और सजा का खतरा है, पर्सनल लॉ की पाबंदी न करने की एक वजह मुसलमानों की इन कानूनों का न जानना भी है, इसलिए भी ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि उनका संक्षिप्त रूप में जिक्र कर के आम मुसलमानों को अवगत कराया जाए, इस तरह के कानूनों के महत्व का अंदाजा करने के लिए सिर्फ ये बता देना काफी होगा कि कुरआन मजीद की छः सूरतों, बकरह, निसा, नूर, अहजाब, मूम्तहिनह और तलाक में 60 से ज़्यादा आयतों के अंदर ये बयान हुए हैं और उन हदीसों को तो गिनना ही मुश्किल है जिनमें इस किस्म के आदेश व निर्देश दिए गए हैं, उन में जो बहुत महत्वपूर्ण हैं उन पर अलग अलग बात की जा रही है। ◆◇◆

AI आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

—इदारा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) अपनी जादुई तकनीकि के लिए ही नहीं बल्कि कैरियर के रूप में उभरते नये क्षेत्र के रूप में भी चर्चा में है। ऐसा कहा जा रहा है कि अभी तक कम्प्यूटर से जो संभव नहीं था, वह एआई आने के बाद संभव हो गया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है बनावटी तरीक़े से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। जैसे रोबोट और ऑटोमैटिक काम करने वाली मशीनें। इस तकनीकि का इस्तेमाल आटोमैटिक कार बनाने में किया जाने लगा है। यह कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के आधार पर कार्य करता है, जैसे हवाई जहाज को ऑटो पायलट मोड पर चलाने की तकनीकि, डिजाइनिंग हो या लेखन सब कुछ एआई के ज़रिये बेहतर, आसान और सुविधाजनक हो गया है। कहा यह भी जा रहा है कि इस तकनीकि के आ जाने से बेरोजगारी बढ़ेगी, लेकिन यह पूरा सच नहीं है। रोजगार के क्षेत्र में यह युवाओं के लिए बेहतरीन अवसर साबित हो रहा है। अगर समय रहते इस तकनीक के बारे में पढ़ और जान लिया जाए तथा इस क्षेत्र में कदम रख दिया जाए तो अभी इसमें बहुत ज़्यादा संभावनाएं हैं। सरकार द्वारा बजट में डिजिटल इंडिया के लिए 3073 करोड़ रूपए का आवंटन किया गया, जिससे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और रोबोटिक्स जैसे क्षेत्रों में नये अवसर पैदा होंगे। दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में एक माइक्रोसॉफ्ट के बिल गेट्स का भी मानना है कि यह दौर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है। इसका भविष्य बहुत विकसित और तेजी से बढ़ने वाला है। यह ऐसी तकनीकि है जिसका इस्तेमाल आने वाले दिनों में बहुत सारे क्षेत्रों में किया जाएगा। आने वाले दौर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल कारोबार को और अधिक कारगर बनाने, मौसम का सटीक आंकलन करने, सुपर रोबोट बनाने आदि में किया जाएगा। किसी भी क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए दो चीज़ें बहुत ज़रूरी होती हैं। एक तो उस क्षेत्र में रूचि हो। दूसरे उस क्षेत्र के बारे में सही जानकारी हो। यदि इन दोनों चीज़ों का अभाव है और दूसरों की देखा–देखी किसी क्षेत्र में अपने क़दम रख रहे हैं तो वह आपके लिए जीवन यापन की मजबूरी बन सकती है, लेकिन उस क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पाएंगे। इसलिए एआई के क्षेत्र में क़दम रखने से पहले इसके बारे में पूरी जानकारी हासिल कर लें। इंटरनेट के इस युग में बेसिक जानकारी हासिल कर पाना कोई मुश्किल काम नहीं है।

शिक्षाः–

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का क्षेत्र नया होने के कारण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। इसमें कैरियर बनाने की अपार संभवनाएं हैं। एआई में दर्जनों शाखाएं हैं, जिसको अपनी रूचि के अनुसार चुना जा सकता है। ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक्सपर्ट्स की मांग काफी तेजी से बढ़ रही है। इस क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए साइंस से 12वीं पास करना ज़रूरी है। इसके बाद डेटा, साइंस, कम्प्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विषयों में स्नातक पास होना चाहिए। इसके बाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से

जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में अपनी रुचि अनुसार कोर्स करके अवसर की तलाश की जा सकती है। यदि कोर्स के बाद अनुभव हासिल कर लिया जाए तो बेहतर कैरियन बन सकता है।

एआई कोर्सः–

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के कोर्स हैं। इससे संबंधित जिस क्षेत्र में जाना चाहते हैं, उसके बारे में डिग्री और अनुभव ज़रूरी है। जैसे मशीन लर्निंग और एआई में पीजी, फाउंडेशन ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एण्ड मशीन लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एण्ड मशीन लर्निंग प्रोग्राम, फुल स्टैक मशीन लर्निंग एंण्ड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रोग्राम, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एण्ड डील लर्निंग में पोस्ट ग्रेजुएट सर्टिफिकेट प्रोग्राम आदि।

संभावनाएंः–

यह काफी विस्तृत क्षेत्र है, जहां हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और इलेक्ट्रॉनिक, मेडिकल साइंस, फिजिकस, साइकोलॉजी और इस जैसे दूसरे फील्ड में इस तकनीकि का इस्तेमाल बढ़ेगा। इसकी तकनीक की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। इसके जरिए कम्प्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिन्हें मानव मस्तिष्क के आधार पर चलाये जाने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में इस तकनीकि में जबरदस्त सुधार हुआ। इसके बाद इसकी चर्चा हर ओर होने लगी। एआई से लैस अनेक वेबसाइट जो मिनटों में मनचाही, फोटो बनाने, लेख लिखने, एडिटिंग करने और डीप फेक वीडियो बनाने के लिए जाने जाते हैं, वे इस तकनीकि की प्रोग्रामिंग का बहुत छोटा रूप हैं। इससे समझा जा सकता है कि आने वाले समय में एआई का क्या महत्व होगा।

शिक्षण संस्थाएंः–

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबन्धित कोर्स देश के अनेक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाओं में कराए जाते हैं। हर शिक्षण संस्थान में इसकी फीस अलग–अलग है, जिसके बारे में उनसे संपर्क करके जानकारी हासिल की जा सकती है। अगर शिक्षण संस्थानों की बात करें तो खड़गपुर, दिल्ली, मुम्बई, कानपुर, मद्रास, गुवाहटी, रूड़की आदि शहरों में स्थित आईआईटी कालेज में एआई से संबंधित कोर्स किये जा सकते हैं। इसके अलावा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलुरू, नेताजी सुभाष इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली, बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस, पिलानी सेंटर फॉर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एण्ड रोबोटिक्स, बंगलुरू, नेशनल इंस्टीट्यूट इंजीनियरिंग, मैसूर, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, इलाहाबाद, यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद आदि संस्थानों से संपर्क किया जा सकता है।

वेतनः–

चूंकि अभी यह उभरता हुआ क्षेत्र है, इसलिए जानकारी और अनुभव के आधार पर अच्छा वेतन हासिल किया जा सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में डिग्री स्तर की शिक्षा हासिल करने वाले युवा शुरूआत में 40 से 50 हज़ार तक वेतन हासिल कर सकते हैं। बाद अनुभव और काम के आधार पर उनका वेतन बढ़ता जाता है। वे 80 हज़ार से लेकर एक लाख प्रतिमाह तक कमा सकते हैं। इस क्षेत्र में जितना अधिक मेहनत किया जाए, वेतन उसी आधार पर बढ़ता जाता है।

❖❖❖

(कान्ति साप्ताहिक फरवरी 2024 से ग्रहीत)

क़ुर्बानी का महत्व और उसका संदेश

मोहम्मद इक़बाल नदवी

क़ुर्बानी अरबी शब्द है जिसका अर्थ होता है कोई ऐसा कार्य करना जो बन्दे को ईश्वर के निकट करदे

क़ुर्बानी का इतिहासः—

क़ुर्बानी का इतिहास बहुत पुराना है। हज़रत आदम अलै0 के दो बेटे हाबील और क़ाबील ने अल्लाह के सामने क़ुर्बानी पेश की, हाबील की क़ुर्बानी को अल्लाह तआला ने स्वीकार कर लिया और दूसरे बेटे काबील की क़ुर्बानी स्वीकार नहीं हुई। लेकिन इस्लाम में क़ुर्बानी का संदर्भ अल्लाह के महान पैगम्बर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के जीवन में मिलता है फिर वहीं से इस को क़ानूनी तौर पर लागू किया गया और अब क़यामत तक यह कार्य उन्हीं के तौर तरीक़े पर होता रहेगा। जिसको इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत कहते हैं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम का जीवन अनेकों प्रकार की कठिन से कठिन परिक्षाओं से भरा हुआ है अल्लाह तआला ने आपको अपना खलील (जिगरी दोस्त) के लक़ब से नवाज़ा था इसके लिए आपकी बहुत परीक्षा ली गई आपकी क़ौम मूर्तियों की पूजा करती थी खुद आपके पिता आज़र भी मूर्ति की पूजा करते थे और उसका कारोबार भी करते थे इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अन्दर से घुटन होती थी कि लोग अपने एक पालनहार को छोड़ कर सैकड़ों झूठे माबूदों के सामने नतमस्तक होते हैं। इसलिए खुल कर इसका विरोध किया जिसके कारण उन्हें जलती हुई आग में डाल दिया गया परन्तु आग ने उनको जलाया नहीं क्योंकि खुदा तआला ने उसे ठण्डी और सलामती का व्यवहार इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ करने का हुक्म दिया था लेकिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम कि परीक्षा यहीं पर समाप्त नहीं होती है। बुढ़ापे की आयु में उन्हें एक बेटा होता है जिसका नाम इस्माईल रखा जाता है। इस्माईल के साथ इब्राहीम खुशी का जीवन व्यतीत करना चाहते हैं कि ईश्वर का आदेश होता है कि अपने इस नन्हे बच्चे और उसकी माँ को मक्का के चटियल मैदान में छोड़ कर आएं ईश्वरीय आदेश का पालन करते हुए वह अपने परिवार को खुदा के भरोसे उस गर्म रेगिस्तान में छोड़ आते हैं पत्नी पूछती हैं कि मुझे यहां किस के सहारे छोड़ कर जा रहे हैं। क्योंकि यहां तो खाने पीने और बुनियादी जीवन व्यतीत करने की वस्तुएं तक मौजूद नहीं हैं। लेकिन पत्नी को कोई जवाब नहीं देते हैं। पत्नी हाजरा समझ जाती हैं। और कहती हैं क्या मुझे मेरे बच्चे के साथ छोड़ने का आदेश ईश्वर की तरफ से है इब्राहीम अलैहिस्सलाम जवाब देते हैं हाँ जवाब में हाजरा कहती हैं कि ठीक है तब मेरा खुदा मेरे साथ है। माँ—बेटा एक गर्म रेगिस्तान में जहां दूर दूर तक कोई आबादी नहीं जीवन यापन करने लगते हैं। एक दिन नन्हें इस्माईल को बहुत तेज़ प्यास लगती है मगर वहां पानी कहां माँ पानी की तलाश में सफा और मरवा नामी पहाड़ पर दौड़ने लगती हैं। लेकिन कहीं पानी नहीं मिलता तब ईश्वरीय मदद आती है और नन्हे से बच्चे के पास पानी का एक चश्मा फूट पड़ता है जिसे आज ज़मज़म कहा जता है। कुछ वर्षों के बाद इब्राहीम अपने परिवार से मिलने

आते हैं अब इस्माईल कुछ बड़े हो चुके हैं बाप की उंगली पकड़ कर चलने लगते हैं बच्चों की तोतली जुबान में बाप से बातें भी करने लगते हैं। इब्राहीम का हृदय बेटे की मोहब्बत से भर जाता है शीघ्र ही खुदा का ऐसा आदेश आता है जिसका उदाहरण मानवीय इतिहास में नहीं मिलता वह आदेश इब्राहीम को सपने में दिखाया जाता है कि वह अपने नन्हे बच्चे की गर्दन पर छुरी चला रहे हैं। सपने को सच्चा करने के लिए आखिर कार बेटे की गर्दन पर छुरी चला देते हैं। खुदा की तरफ़ से यह इस परीक्षा में भी सफल होते हैं और आसमान से एक मेढ़ा उनकी जगह ज़िब्हा (कुर्बान) हो जाता है। और इस तरह ईश्वर अपने मित्र इब्राहीम से कहता है कि ऐ इब्राहीम तुमने अपना सपना सच्चा कर दिया हम इसी प्रकार अच्छे लोगों को बदला दिया करते हैं खुदा तआला ने इब्राहीम को इन समस्त कुर्बानियों को पसन्द किया और रहती दुनिया तक इस अमल को मुसलमानों में जारी कर दिया उन्हीं की याद को हज और कुर्बानी की शक्ल में अन्जाम दिया जाता है। और मुसलमान हर वर्ष हज के दिनों में जानवर की शक्ल में कुर्बानी अल्लाह को खुश करने के लिए करते हैं और इस प्रकार कुर्बानी का यह संदेश दिया जाता है कि सच्चाई और वास्तविकता के पथ पर चलने के लिए अपने जीवन की अमूल्य वस्तुओं को भेंट करना पड़ता है। धन दौलत की मोह माया को त्यागना पड़ता है क्योंकि खुदा तआला तो मानव के हृदय को देखता है कि वह ईश्वर के लिए कितना निर्मल तथा पवित्र है उसकी धड़कनें अपने पालनहार के लिए कितनी बार धड़कती हैं। क्योंकि ईश्वर उनके हृदय की हर धड़कन में होता है जो उसके लिए सदैव समर्पण की भावना रखते हैं। कुर्बानी का यह उद्देश्य हरगिज़ नहीं होता है कि केवल जानवर को ज़िब्हा करके खा लिया जाए क्योंकि खुदा तआला ने कुर्आन में कहा है कि खुदा के पास न तुम्हारे जानवरों का गोश्त पहुँचता है और न ही उसका खून बल्कि तुम्हारे हृदय की चेतना को वह देखता है।

(सूरः अल हज–37)

इसलिए प्रत्येक मुसलमान को चाहिए कि वह अपने दिल को खुदा के लिए पवित्र रखे उसके जीवन में जो भी कठिनाईयाँ उत्पन्न हों उनसे भयभीत होकर धर्य का दाम हाथ से न छोड़े उसके मार्ग पर चलने वाले सदैव सफल होते हैं हाँ जीवन को घटिया और पाप वाले कार्यों से बचाने के लिए उसको समय समय पर कुर्बानी देनी होगी। हो सकता है उसको इब्राहीम अलैहिस्सलाम की विरासत को जीवित रखने के लिए अनेकों प्रकार की परिक्षाओं से गुज़रना पड़े और अंतिम संदेश्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सच्चा अनुयाई होने के लिए अपनी छवि को झूठ घृणा ईर्श्या मोह लालच पाप से कमाये हुए धन दौलत जैसे अनेकों गुनाहों से पाक साफ रखना होगा खुदाई आदेशों का पालन उसके जीवन का एक मात्र उद्देश्य हो। और सच्चाई की डगर पर चलने के लिए हर आने वाली समस्या का मुकाबला करने को सदैव तैयार रहे आखिरकार सफलता उसी को मिलेगी जैसा कि हम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के जीवन में देखते हैं उनके जीवन को समस्त मुस्लिम समाज को पढ़ना चाहिए और उससे प्रेरित हो कर एक ऐसे जीवन व्यतीत करने का संकल्प करें जिसमें सत्य की ज्योति से हर अन्धकार में उसे अपने जीवन का मार्ग दिखाई देता हो।

❖❖❖

सामप्रदायिकता की हार

इं0 जावेद इक़बाल

लीजिए बन गई मोदी सरकार। हालांकि मोदी सरकार कहना उचित तो नहीं है इस बार सरकार पूर्ण बहुमत से 32 पायदान पीछे रह गई उनकी पार्टी, बीजेपी। नारा तो दिया था चार सौ पार का, प्रयास भी बहुत किए थे। केसरिया जबान का भरपूर इस्तेमाल किया था, ज़बान से बढ़ कर प्रभावकारी था साहब का लहजा। शब्दों की कड़वाहट और लहजे के बाण पूरे इलेक्शन के दौरान कुछ ऐसे जोशीले अंदाज़ में चलाए गए कि वह यह भूल गए कि भारत की मिट्टी में प्यार मुहब्बत की महक कुछ ऐसी रची बसी है कि साम्प्रदायिकता के त्रिशूल उसे भेदने में अक्सर नाकाम ही रहते हैं। जितना ज़्यादा नफरत का ज़हर देश की जनता के मन मस्तिष्क में घोलने का प्रयास किया गया उतना ही ज़्यादा मुहब्बत की दुकान का कारोबार फलता फूलता रहा। इसका नतीजा यह हुआ कि चार सौ पार का सपना चकनाचूर हो गया और हर तरह का साम दाम दण्ड भेद का पहिया चलाने के बावजूद 240 पार न हो सकी नैय्या।

बैसाखियों के सहारे जोड़ तोड़ करके सरकार तो बन गई, शपथ ग्रहण समारोह भी सम्पन्न हो गया मगर मन में यह एहसास अवश्य ही सता रहा होगा कि इन बैसाखियों का कोई भरोसा नहीं, यह तो पहले से फ्रेकचर्ड हैं, न जाने कब पुनः टूट कर बिखर जायें।

अल्लाह तआला बहुत रहीम है, बहुत करीम है, वह किसी अधर्मी ,पापी, जालिम और नाइंसाफ व्यक्ति या कौम को तुरंत सजा नहीं देता, वह उसे ढील देता है अर्थात अवसर देता है सुधरने का, जुल्म और अन्याय के मार्ग को त्यागने का। अल्लाह जो एक है, सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञाता है, सब का पालनहार है, प्रभुत्व शाली है, क्षमा करना उसकी प्रिय नीति है, वह अवसर देता है कि मेरा बंदा अनेक ख़ुदाओं की चौखट पर मत्था टेकने से बाज आ जाए, इधर उधर भटकने से अच्छा है कि केवल एक ईश्वर की गुलामी को स्वीकार कर के अपने पापों से तौबा करले, प्रायश्चित करले।

अतः दस साल तक ढील देने के बाद उस मालिक ने हमारे तेजस्वी और कर्मठ प्रधानमंत्री को तीसरी बार देश की सेवा का अवसर तो दिया है मगर थोड़ी सी लगाम भी खींची है। अब अगर मोदी जी स्वयं को केवल एक वर्ग का हितैषी सम्राट समझना छोड़ कर देश के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक नागरिक के दिल में जगह बनाना चाहते हैं तो उन्हें साम्प्रदायिकता को त्याग कर, भड़काऊ भाषणों को भूल कर, प्रत्येक धर्म और जाति के प्रति स्नेह, सौहार्द, सहानुभूति की नीति अपनानी होगी। वैसे भी एक बार वह कह चुके हैं कि मैंने मुसलमानों के ख़िलाफ कभी कुछ नहीं बोला। अगर याददाश्त में कोई कमी नहीं है तो वह स्वयं भी जानते होंगे कि उनके इस बयान में कितना सत्य है। वैसे तो उन्हें अपना बचपन का मुसलमान दोस्त भी याद है, उसके घर आना जाना भी याद है और उसके घर में ईद की सिवइयों का स्वाद भी याद है। तो फिर यह वर्तमान में नफरती शूल उनके स्वभाव में कहां से आ गए? संभवतः सत्ता का सुख भोगने की लालसा और किसी संगठन का सेवक बनने के बाद यह परिवर्तन उनके जीवन में आया हो। मगर अब नफरत और साम्प्रदायिकता की राजनीति का कोई औचित्य नहीं रह गया है।

सुख तो उन्होंने बहुत भोग लिया, उम्र का आखरी पड़ाव शुरू हो गया है। तीसरे सत्ता काल को वास्तव में महाकाल मान कर सर्वधर्म सम्भाव की

नीति के आधार पर उन्हें जनहित और देश हित के कार्यों में लग जाना चाहिए। संभवतः इसका उन्हें एहसास है तभी तो इलेक्शन की समाप्ति पर धर्मगुरुओं जैसा चोला धारण करके जिस प्रकार उन्होंने ध्यान आराधना की, वह प्रशंसनीय न भी कही जाए मगर सराहनीय तो है ही। उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि ईश्वर ने मुझे जन कल्याण के लिए भेजा है। बेशक यह हक़ीक़त है कि प्रत्येक व्यक्ति को उस मालिक ने ही भेजा है। उस मालिक ने जो एक अकेला है, सर्वज्ञाता है, सर्वशक्तिमान है, उसने प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अपनी शक्ति और क्षमता के मुताबिक जनहित के कार्य करने का आदेश दिया है। उस मालिक का निर्देश है कि तुम मेरे सिवा किसी अन्य की भक्ति न करो और तुम मेरी धरती को सजाने संवारने के कार्य करो, समाज में नफरत के बीज न बोओ, आपस में फूट न डालो। धरती पर शांति स्थापित करो, बदअमनी न फैलाओ। साहब आप तो स्वयं ज्ञानी हैं, सक्षम हैं, अनुभवी हैं, आप को इधर उधर भटकना शोभा नहीं देता। थोड़ा सा चिंतन मनन करिये, ईश्वर के एकत्व को पहचानये, आपको धरती के सभी इंसान किसी भी धर्म और जाति के हों, काले हों या गोरे, गरीब हों या अमीर ईश्वर के परिवार का हिस्सा दिखाई देंगे।

भेदभाव और नफ़रत की राजनीति छोड़ कर, तीसरे चरण को ईश्वर की ओर से अंतिम अवसर मान कर यदि देश और जनता की सच्ची सेवा करली तो यह मोदी–3.0 दौर भारत के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।

❖❖❖

पृष्ठ....17...का शेष

जिसकी यादगार में शिया हज़रात मुहर्रम में ताजिये तथा अलम निकालते हैं, मातम करते हैं, शोक प्रदर्शन हेतु मज्लिसें आयोजित होती हैं। मुहर्रम के प्रारम्भिक दस दिन और फिर सफ़र मास की 20 तारीख जो चेहल्लम कहलाती है, इसी शोक प्रदर्शन तथा मातम–व–शेवन में गुजरती है। ईराक तथा ईरान में जहां शिया सम्प्रदाय की बड़ी संख्या है और अवध में जहां एक सौ छत्तीस वर्ष तक शिया खानदान की हुकूमत रही है, और उसमें भी विशेष कर लखनऊ में मुहर्रम की बड़ी धूम धाम और उससे सम्बन्धित रीतियों का आयोजन होता है। मुहर्रम की रीतियों में (जैसा कि समस्त स्थानीय रीतियों का दस्तूर है) हर जगह स्थानीय विशेषताएं विद्यमान हैं। कहीं ताजियादारी का बड़ा जोर है, कहीं कम। मातम और शोक प्रदर्शन के रूप भी विभिन्न हैं। कहीं इस बारे में परिवर्तन एवं सुधार किए गए हैं और कहीं पुरातन परिपाटी अब भी प्रचलित हैं, और उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

सुन्नी मुसलमान सामूहिक रूप से इन रसमों में भाग नहीं लेते, उनका दृष्टिकोण मुहर्रम के बारे में अपने शिया भाईयों से पूर्णतया भिन्न है। वह हज़रत हुसैन (रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु) द्वारा उठाए गये कदम को उचित, सराहनीय और उनसे सम्बन्धित घटना को सत्यप्रियता, सिद्धान्तप्रियता, साहस, वीरता, निर्भीकता और पराक्रम का एक अद्वितीय एवं अनुपम कारनामा समझते हैं। उनको वह हर प्रकार से उत्पीड़ित एवं उनके क़ातिलों और विरोधियों को अत्याचारी समझते हैं, परन्तु उनके अनुसार अपनी भावनाओं एवं संवेगों को प्रदर्शित करने की यह रीति एवं पद्धति इस्लाम की प्रवृत्ति के विरूद्ध और उनके लिए निरर्थक एवं लाभ रहित है, जिनके नाम पर यह सब कुछ मनाया जाता है। वह केवल बखशिश की दुआ और पुण्यात्मक कार्यों पर बस करते हैं। और उनके आदर्श से वास्तविक लाभ उठाना और सत्य पर जमे रहने तथा असत्य के सामने डट जाने को उनकी शहादत का मूल सन्देश समझते हैं।

❖❖❖

अलसी में छिपा है सेहत का असली राज

पुराने ज़माने से बीजों को सबसे न्यूट्रिशियन फूड के तौर पर जाना जाता है। इनको खाने से सेहत को कई फायदे मिलते हैं। ऐसे में अलसी के बीज की बात की जाए, तो यह कई तरह के औषधीय गुणों से भरे होते हैं। इनका रोजाना सेवन करने से सेहत को कई फायदे मिलते हैं। अलसी को फ्लेकसीड भी कहते हैं और इसमें एंटीऑक्सिडेंट, फाइबर, प्रोटीन और ओमेगा–3 जैसे पोशक तत्व होते हैं।

भारत में हजारों वर्षों से आयुर्वेदिक चिकित्सा में इनका इस्तेमाल किया जा रहा है। अलसी के बीज, इसका तेल, पाउडर, गोलियां, कैप्सूल और आटे के तौर पर उपयोग किए जाते हैं। इसके साथ ही लोग इन बीजों को कब्ज, डायबिटीज, हाई कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोग, कैंसर और कई अन्य बीमारियां रोकने के लिए उपयोग में लाते हैं। केवल यही नहीं बल्कि, अलसी में लिग्नन्स, एंटीऑक्सिडेंट, फाइबर, प्रोटीन और पॉली– अनसेचुरेटेड फैटी एसिड जैसे अल्फा–लिनोलेनिक एसिड या ओमेगा–3 जैसे ज़रूरी तत्वों का भंडार होता है। इन पोशक तत्वों का सेवन कई तरह के रोगों के जोखिम को कम करने में मदद करता है। इन बीजों में कई औशधीय गुण भी पाए जाते हैं।

आयुर्वेदिक गुणों से भरपूर:-

अलसी का स्वाद अच्छा, पचने में लाभकारी और तासीर में गर्म माना जाता है। अपने इन गुणों के चलते आयुर्वेद में इसे कई तरह के उपयोग में लाया जाता है। इसे नसों का दर्द, पक्षाघात, गठिया जैसे वात विकारों के लिए उपयोगी माना जाता है। यह वात को संतुलित करता है लेकिन पित्त और कफ को बढ़ाता है, इसलिए अत्यधिक रक्तस्राव विकारों से पीड़ित लोगों और गर्भधारण की योजना बनाने वालों को सावधानी के साथ इसका उपयोग करना चाहिए।

ब्लड शुगर कंट्रोल करने में मददगार-

अलसी के बीज डायबिटीज के मरीजों में ब्लड शुगर लेवल कम करने में सहायक होते हैं। इसके घुलनशील फाइबर भूख को दूर रखने में मदद करते हैं। ऐसे में जो लोग वजन घटाने के इच्छुक हैं, उनके लिए यक काफी लाभकारी माना जाता है।

बैड कोलोस्ट्राल को करे कम:-

कई अध्ययनों से पता चला है कि अलसी के बीज एलडीएल (खराब कोलेस्ट्राल) को कम करते हैं। साथ ही यह सचडीएल (अच्छे कोलेस्ट्राल) को सुधारने का काम भी करता है, जिससे ब्लड कोलेस्ट्राल लेवल को मैनेज करने और दिल की सेहत को मैनेज करने और दिल की सेहत में सुधार करने में मदद मिलती है।

बीपी में सुधार सहित हैं कई और फायदे:-

अलसी के बीज ब्लड प्रेशर को भी सही करने का काम करते हैं। यह एक इम्यूनिटी बूस्टर फूड है और इसमें एंटीएजिंग गुण पाये जाते हैं। साथ ही यह त्वचा और बालों के लिए भी अच्छा है।

प्रोटीन का भंडार:-

अगर आप मांस–मछली नहीं खाते हैं, तो अलसी के बीज आपके लिए प्लांट बेस्ड प्रोटीन का सबसे बढ़िया स्रोत है। यह अकेला ऐसा वेजिटेरियन फूड है, जिसमें ओमेगा 3 फैटी एसिड पाया जाता है।

पाचन करे दुरुस्त:-

इसमें अच्छी मात्रा में फाइबर होते हैं और जिससे कब्ज़ खत्म करने और पाचन को दुरुस्त बनाने में मदद मिल सकती है।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

बोस्निया के पूर्व सैन्य जनरल रात्को म्लादिक को उम्रकैद:-

इंटरनेशनल डेस्क– बोस्निया के पूर्व सैन्य जनरल रात्को म्लादिक को इंटरनेशनल कोर्ट ने करीब आठ हजार मुसलमानों का कत्ल कराने के लिए 27 मई 2024 को उम्रकैद की सजा सुनाई है। बता दें, रात्को ने 1992–1995 में चले बोस्नियन वॉर के दौरान मुस्लिम मर्दों का कत्लेआम करवाया था। इस दौरान हज़ारों महिलाओं का रेप भी किया गया। करीब दो दशक पहले हुए बोस्निया युद्ध के दौरान रात्को ने युद्ध का नेतृत्व किया था इस युद्ध में मुस्लिम मर्दों को चुन–चुनकर जेल लाया जाता था और उन्हें सामूहिक रूप से गोली मार दी जाती थी। इसके बाद इन्हें अज्ञात जगहों पर ले जाकर दफना दिया जाता था। रात्को करीब दो दशक तक गिरफ़्तारी से बचता रहा था, लेकिन आरोप साबित होने के बाद से साल 2011 में सर्बिया में अरेस्ट कर लिया गया था। बोस्निया सर्ब युद्ध के दौरान इस कत्लेआम के लिए सर्ब नेता रादोवान करादजिक और सर्बिया के प्रेसिडेंट स्लोबोदान मिलोसेविक पर भी मुकदमा चलाया गया था। इंटरनेशनल कोर्ट ने साल 2016 में करादजिक को 40 साल की सजा सुनाई थी। वहीं मिलोसेविक की साल 2006 में कारावास में मौत हो गई थी।

तीन देशों से फलस्तीन को मिल गई मान्यता+-

इस्राइल पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव बढ़ाने के लिए तीन पश्चिमी यूरोपीय देशों– स्पेन, नॉर्वे और आयरलैंड ने मंगलवार को औपचारिक रूप से फलस्तीन को मान्यता दी। स्पेन के पीएम पेड्रो सान्चेज ने कहा, 'यह एक ऐतिहासिक फैसला है जिसका एक ही लक्ष्य है इस्राइलियों और फलस्तीनियों को शांति दिलाने में मदद करना।'

इस्राइल के विदेश मंत्री इस्राइल काट्ज ने तुरंत स्पेन पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि सांचेज की सरकार यहूदियों के खिलाफ नरसंहार और युद्ध अपराधों को भड़काने में शामिल हो रही है। उधर, आयरलैंड के प्रधानमंत्री साइमन हैरिस ने कहा, 'यह एक अहम पल है। यह दुनिया को एक संकेत भेजता है कि एक देश के रूप में आप ऐसे व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं जो दो राज्य समाधान की आशा को ज़िन्दा रखने में मदद कर सकते हैं।' नॉर्वे के विदेश मंत्री एस्पेन बार्थ ईदे ने कहा कि 30 से ज़्यादा वर्षों से, नॉर्वे फलस्तीन के सबसे मजबूत समर्थकों में से एक रहा है।

"धरती हर 10 साल में 0.26 डिग्री गर्म हो रही":-

ग्लोबल वार्मिंग की वजह से हर 10 साल में धरती 0.26 डिग्री गर्म हो रही है। 2014–23 के दौरान धरती का तापमान पिछले दशक की तुलना में 1.19 डिग्री तक बढ़ गया है। लीड्स यूनिवर्सिटी के सहयोग से 50 से ज़्यादा इंटरनेशनल वैज्ञानिकों की नई स्टडी में यह दावा किया गया है।

यूएस के पूर्व सैनिक ने 100 साल की उम्र में रचाई शादी:-

द्वितीय विश्वयुद्ध लड़ने वाले अमेरिका के पूर्व सैनिक हारोल्ड टेरेंस ने 100 साल की उम्र में 96 वर्षीय प्रेमिका जीन स्वेर्लिन से शादी की।

टेरेंस और स्वेर्लिन ने फ्रांस में नॉरमैंडी के डी0डे समुद्र तट पर स्थित एक टाउन हॉल में शादी की। यह वही स्थान है जहां 6 जून, 1944 को मित्र देशों के विमानों के उतरने के बाद भीषण लड़ाई हुई थी जिससे यूरोप को एडोल्फ हिटलर के अत्याचार से मुक्ति दिलाने में मदद मिली। विवाह समारोह में शामिल हुए कुछ लोगों ने सेकंड वर्ल्ड वॉर के समय की पोशाक पहनी हुई थी।

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳- ٹیگور مارگ
لکھنؤ- ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 01/07/2024 تاریخ

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकजा़ करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के कि़लों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए।

आमीन।

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)
WEBSITE: WWW.NADWA.IN
Email : nizamat@nadwa.in

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतिया)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
ONLINE DONATION LINK
https://www.nadwa.in/donation

UPI करते समय रिमार्क में मद (अतिया/ज़कात/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं **08736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।
नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 23 - Issue 05

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

DESIGNED BY SAAD HAMDANIWALA 9860448783

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3